सेवा क्षेत्र

10
अध्याय

अपने सेवा क्षेत्र के आकार और गतिशीलता के लिए भारत अग्रणी है। भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का योगदान कई गुणा रहा है: सकल घरेलू उत्पाद में इसका हिस्सा 55.2 प्रतिशत है, 10 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ रहा है, कुल रोजगार के लगभग एक चौथाई का योगदान दे रहा है, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इन्फ्लो में काफी अच्छा हिस्सा है और कुल निर्यात का लगभग एक तिहाई है और वर्ष 2010-11 की प्रथम छमाही में निर्यात में बहुत तेजी से वृद्धि (27.4 प्रतिशत) दर्ज की है।

10.2 इस क्षेत्र से संबंधित डाटा अब भी अपर्याप्त हैं और इन्हें विविध स्रोतों से एकत्रित करना होता है। यद्यपि नवीनतम उपलब्ध डाटा विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्रोतों से लिया गया है, जहां तक संभव होता है केवल विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त डाटा का उपयोग करने पर ध्यान दिया जाता है। उम्मीद है कि सेवाओं के संबंध में अलग अध्याय बनने से भविष्य में इस क्षेत्र के संबंध में बेहतर तथा अधिक नियमित डाटा उपलब्ध हो सकेगा। अवसंरचना (सड़क, रेलवे, नागरिक उड्डयन), वित्तीय सेवाओं और सामाजिक सेवाओं (स्वास्थ्य एवं शिक्षा) जैसी कुछ सेवाओं पर चर्चा सर्वेक्षण के अन्य अध्यायों में की गई है। समान संबंधित विशेषताओं के कारण निर्माण उद्योग पर इस अध्याय में संक्षिप्त चर्चा की जाती है और भारतीय रिजर्व बैंक तथा विश्व व्यापार संगठन जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं इसे अपनी सेवाओं में शामिल कर रही हैं, राष्ट्रीय लेखा वर्गीकरण के माध्यम से भी यह तीसरे क्षेत्र के बजाय दूसरे क्षेत्र का हिस्सा हैं।

10.3 यह अध्याय सकल घरेलू उत्पाद, रोजगार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और राज्यों के घरेलू उत्पाद के संदर्भ में भारत की अर्थव्यवस्था में सेवाओं की भूमिका का अध्ययन करता है और कुछ अंतराष्ट्रीय तुलनाएं करता है। यह अध्याय विभिन्न सेवा उपक्षेत्रों के निष्पादन का अध्ययन करता है जो अन्य अध्यायों में भली-भांति शामिल नहीं है जैसे घरेलू व्यापार; होटल एवं रेस्तरां सहित पर्यटन, पोत परिवहन एवं पत्तन सेवाएं, भंडारण, दूरसंचार संबंधी सेवाएं, अचल संपदा, सूचना प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सेवाएं; लेखाकरण एवं लेखापरीक्षा सेवाएं; अनुसंधान और विकास सेवाएं कानूनी सेवाएं एवं परामर्श; निर्माण और खेलों जैसी कुछ विशिष्ट सामाजिक सेवाएं।

भारत के लिए सेवा क्षेत्र का महत्व

10.4 अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं में इसके योगदान को देखकर सेवा क्षेत्र के महत्व का अनुमान लगाया जा सकता है।

सेवा सकल घरेलू उत्पाद

10.5 घटक लागत (वर्तमान मूल्यों पर) भारत के सकल घरेलू उत्पाद में सेवाओं का हिस्सा 1950-51 के 30.5 प्रतिशत से तेजी से बढ़कर 2009-10 में 55.2 प्रतिशत हो गया। यदि निर्माण को भी इस क्षेत्र में शामिल कर दिया जाए तो इसका हिस्सा बढ़कर 2009-10 में 63.4 प्रतिशत हो जाता है।

10.6 भारतीय अर्थव्यवस्था की समग्र वृद्धि दर (मिश्रित वार्षिक वृद्धि दर) का 1990 के दशक के 5.7 प्रतिशत से बढ़कर 2004-05 से 2009-10 की अवधि में 8.6 प्रतिशत होना सेवा क्षेत्र में वृद्धि दर के 1990 के दशक के 7.5 प्रतिशत से बढ़कर 2004-05 से 2009-10 में 10.3 प्रतिशत हो जाने के कारण था। सेवा क्षेत्र की वृद्धि इसी अवधि के दौरान कृषि और उद्योग क्षेत्र की संयुक्त वार्षिक उत्पादन वृद्धि के 6.6 प्रतिशत से काफी तेज है। वर्ष 2009-10 में सेवा वृद्धि 10.1 प्रतिशत थी और 2010-11 (अग्रिम अनुमान) में यह 9.6 प्रतिशत थी। भारत की सेवा सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि 1997-98 से ही समग्र सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि से निरंतर अधिक रही है। यह काफी स्थिर भी रही है (चित्र 10.1)।

चित्र 10.1 सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर और सेवा क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद

स्रोत : केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सी.एस.ओ.)

भारत में सेवा रोजगार

10.7 यद्यपि प्राथमिक क्षेत्र (मुख्यत: कृषि) एक प्रमुख नियोक्ता है और उसके बाद सेवा क्षेत्र की बारी आती है, पिछले वर्षों में सेवाओं का हिस्सा बढ़ता रहा है जबकि प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा घट रहा है। 1993-94 से 2004-05 के बीच रोजगार में प्राथमिक क्षेत्र के हिस्से में भारी कमी आई है। दो अन्य क्षेत्रों के रोजगार के हिस्से में परिणामी वृद्धि दूसरे और तीसरे क्षेत्रों के बीच लगभग बराबर-बराबर बंट गई। यद्यपि यह प्रवृत्ति समान थी, वर्ष 2004-05 के मुकाबले में वर्ष 2007-08 में प्राथमिक क्षेत्र में रोजगार में आई गिरावट (-1.1 प्रतिशत) अन्य 2 क्षेत्रों में रोजगार में मामूली आनुपातिक वृद्धि के साथ कम थी जो अन्य दो क्षेत्रों के बीच पुन: लगभग बराबर-बराबर बंट गई (सारणी 10.1)।

भारत में सेवाओं में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश

10.8 प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इन्फ्लो में सेवाओं के हिस्से की गणना में कुछ समस्याएं हैं क्योंकि कंप्यूटर हार्डवेअर और सॉफ्टवेअर, दूरसंचार और निर्माण जैसे कुछ क्षेत्रों में सेवाओं और वस्तुओं में कार्यों का स्पष्ट भेद कर पाना मुश्किल है। इसके बावजूद 4 संयुक्त क्षेत्रों [सेवा (वित्तीय एवं गैर वित्तीय) कंप्यूटर हार्डवेअर और सॉफ्टवेअर, दूरसंचार और आवास एवं अचल संपदा] के हिस्से में मुख्य रूप से सेवाएं शामिल हैं, अप्रैल, 2000 से दिसम्बर, 2010 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी इन्फ्लो लगभग 44 प्रतिशत है। यदि निर्माण को शामिल किया जाता है तो हिस्सा 51 प्रतिशत हो जाता है। वित्तीय और गैर वित्तीय सेवा क्षेत्र जो पूर्ण रूप से सेवा वर्ग में आता है, 21 प्रतिशत हिस्से के साथ सबसे अधिक प्रत्यक्ष

सारणी 10.1 : रोजगार में मुख्य क्षेत्रों का हिस्सा

क्षेत्र	हिस्से			हिस्सों में परिवर्तन		
	1993-94	2004-05	2007-08	2004-05 over 1993-94	2007-08 over 2004-05	2007-08 over 1993-94
प्राथमिक	64.5	57.0	55.9	-7.5	-1.1	-8.6
द्वितीय	14.3	18.2	18.7	3.9	0.5	4.4
तृतीय	**21.2**	**24.8**	**25.4**	**3.6**	**0.6**	**4.2**

टिप्पणी: वर्ष 2004-05 और 2007-08 के लिए इन दोनों दौरों के मध्य बिन्दु पर अनुमानित जनसंख्या भारत के महारजिस्ट्रार के कार्यालय से जनसंख्या के अनुमानित आंकड़े लागू करके प्राप्त की गई थी। वर्ष 1993-94 के लिए सर्वेक्षण अवधि के मध्य बिन्दु पर जनसंख्या 1991 और 2001 की जनगणना के अंतर-गणना से प्राप्त की गई थी। ग्रामीण पुरुषों , ग्रामीण महिलाओं, शहरी पुरुषों और शहरी महिलाओं की कार्य भागीदारी की दरें राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण के इकाई स्तरीय आंकड़ों से अलग से प्राप्त किए गए थे तथा संबंधित आबादी से उनका गुणा करके इन चार वर्गों के लिए सामान्य प्रिंसीपल और सहायक स्थिति कामगारों की कुल संख्या प्राप्त की गई थी। मुख्य क्षेत्रों (प्राथमिक, द्वितीय और तृतीय) के लिए इकाई स्तरीय डाटा से रोजगार का वितरण प्राप्त किया गया था। इन चार वर्गों में कामगारों की संख्या और रोजगार के क्षेत्रवार वितरण से तीनों क्षेत्रों के लिए इन चारों सीढ़ियों में कुल रोजगार के आंकड़े प्राप्त किए गए थे। इससे व्यापक क्षेत्रीय स्तर पर समग्र रोजगार वितरण की गणना की गई थी।

सारणी 10.2 : अधिकतम प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी इन्फ्लो आकर्षित करने वाल क्षेत्र

(करोड़ ₹)

रैंक	क्षेत्र	2008-09 (अप्रैल-मार्च)	2009-10 (अप्रैल-मार्च)	2010-11 (अप्रैल-दिसम्बर)	संचित इन्फ्लो (अप्रैल 2000-दिसम्बर 2010)	कुल इन्फ्लो का प्रतिशत (अमरीकी डॉलर में)
1.	**सेवा क्षेत्र (वित्तीय एवं** गैर वित्तीय)	28,516 **(6,138)**	20,776 **(4,353)**	13,044 **(2,853)**	1,18,274 **(26,454)**	**21%**
2.	**कंप्यूटर सॉफ्टवेअर एवं हार्डवेअर**	7,329 **(1,677)**	4,351 **(919)**	3,054 **(670)**	47,144 **(10,601)**	**8%**
3.	**दूरसंचार** (रेडियो पेजिंग, सैल्यूलर मोबाइल, बेसिक टेलीफोन सेवा)	11,727 **(2,558)**	12,338 **(2,554)**	6,021 **(1,327)**	46,727 **(10,258)**	**8%**
4.	आवास एवं अचल संपदा	12,621 (2,801)	13,586 (2,844)	4,680 (1,024)	42,049 (9,380)	**7%**
5.	**निर्माण कार्य** (सड़क एवं राजमार्ग सहित)	8,792 **(2,028)**	13,516 **(2,862)**	4,109 **(911)**	39,802 **(8,964)**	**7%**

स्रोत : औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग
टिप्पणी : कोष्ठक में दिए गए आंकड़े मिलियन अमरीकी डॉलर में हैं।

विदेशी निवेश इक्विटी इन्फ्लो प्राप्त करने वाला वर्ग है और इसके पश्चात अन्य दो वर्ग अर्थात् कंप्यूटर सॉफ्टवेअर एवं हार्डवेअर और दूरसंचार हैं जिनमें प्रत्येक का हिस्सा 8 प्रतिशत है। महत्व की दृष्टि से आवास एवं अचल संपदा तथा निर्माण की बारी आती है जिनमें प्रत्येक का हिस्सा 7 प्रतिशत है (सारणी 10.2)।

10.9 वैश्विक संकट के कारण वर्ष 2009-10 में 5.5 प्रतिशत की गिरावट के साथ भारत के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इन्फ्लो में कमी देखी गई है इसी तरह सेवा क्षेत्रों में भी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इन्फ्लो में 29.1 प्रतिशत (अमरीकी डॉलर के संदर्भ में) गिरावट देखी गई। वर्ष 2010-11 के पहले नौ महीनों में भी कुल मिलाकर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के मोर्चे पर और सेवा क्षेत्रों में कोई सुधार नहीं देखा गया है।

राज्य-वार तुलना

10.10 अलग-अलग राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के सकल राज्य घरेलू उत्पाद में सेवाओं के हिस्से की तुलना से यह पता लगता है कि सेवा क्षेत्र, भारत के अधिकांश राज्यों में प्रमुख क्षेत्र है (रेखाचित्र 10.2)। दिल्ली, चंडीगढ़, केरल, महाराष्ट्र, बिहार, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों का हिस्सा अखिल भारतीय हिस्से के बराबर अथवा अधिक है।

चित्र 10.2 वर्ष 2008–09 में सेवा क्षेत्र का हिस्सा और वृद्धि

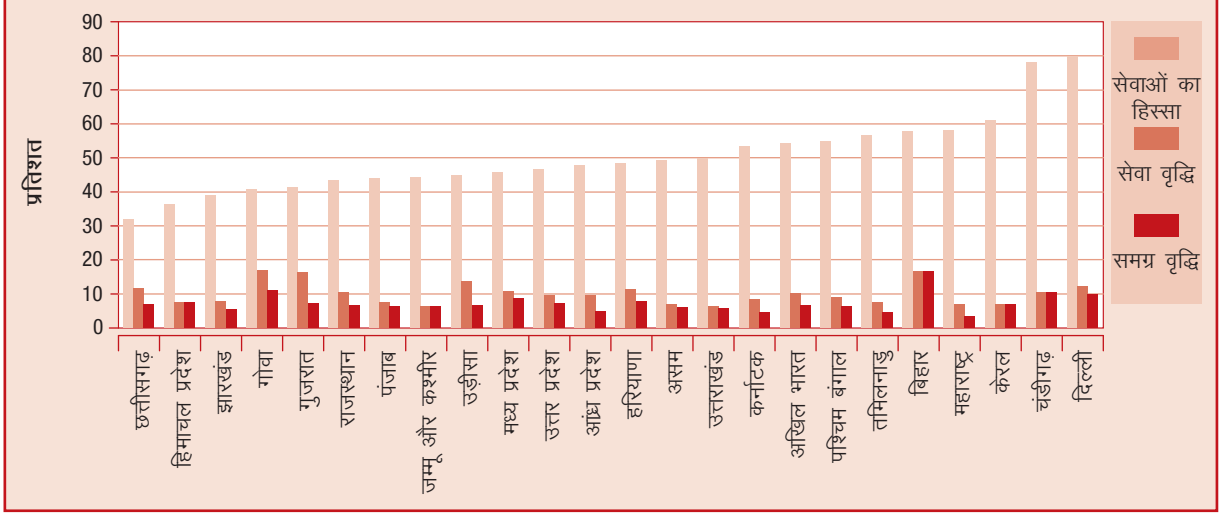

टिप्पणी : गोवा एवं जम्मू और कश्मीर के मामले में डाटा 2007-08 के लिए हैं। वर्तमान मूल्यों में हिस्सा, स्थिर मूल्य और वृद्धि-दर

10.11 सकल राज्य घरेलू उत्पाद की राज्य-वार वृद्धि तृतीय क्षेत्र की अपेक्षाकृत तीव्र वृद्धि से निकट रूप से जुड़ी है। संयोगवश बिहार जिसकी 2008-09 में उच्चतम समग्र वृद्धि दर थी, सेवाओं में भी सबसे तेजी से बढ़ते राज्यों में शामिल है, निम्न आधार (सेवाओं में केवल गोवा की वृद्धि दर बिहार से अधिक है किन्तु यह 2007-08 के लिए है) से इसकी तेजी से प्रगति के कारण है। छत्तीसगढ़ जैसे छोटे राज्य और उड़ीसा एवं राजस्थान जैसे अपेक्षाकृत निम्न आय वाले राज्यों ने जिनकी अपेक्षाकृत निम्न समग्र वृद्धि दरें हैं, प्रगति की सीढ़ी पर चढ़ने के लिए अपने सेवा क्षेत्रों के अच्छे निष्पादन पर जोर देना प्रारंभ कर दिया है। इस तरह भारत में सेवा क्रांति कुछ राज्यों तक केन्द्रित रहने के बजाय और अधिक व्यापक आधारित बन रही है।

सेवा निर्यात

10.12 भारत सेवा प्रधान निर्यात वृद्धि की ओर भी बढ़ रहा है भुगतान संतुलन के आंकड़ों के अनुसार 2004-05 से 2008-09 के दौरान माल और सेवा निर्यात क्रमशः 22.2 और 25.3 प्रतिशत बढ़ा। वैश्विक मंदी के कारण 2009-10 में सेवा वृद्धि गिरावट आयी किन्तु यह गिरावट माल निर्यात वृद्धि में आयी गिरावट से कम स्पष्ट थी तथा 27.4 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 2010-11 की प्रथम छमाही में इसने तेजी से वापसी की है। सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में सेवाओं सहित कुल व्यापार से प्रदर्शित अर्थव्यवस्था का समग्र खुलापन 2000-01 में 29.2 प्रतिशत से उल्लेखनीय वृद्धि के साथ 2008-09 में 53.9 प्रतिशत हो गया यद्यपि वैश्विक संकट के कारण 2009-10 में ये 46.1 प्रतिशत पर आ गया था। यह गिरावट 2008-09 में 41 प्रतिशत के मुकाबले में 2009-10 में सकल घरेलू उत्पाद में माल व्यापार के हिस्से से गिरकर 35 प्रतिशत आ जाने के कारण था। सकल घरेलू उत्पादके लिए सेवा व्यापार के हिस्से में गिरावट 2 प्रतिशत से कम की गिरावट हुई जो 12.9 प्रतिशत से कम हो कर 11.2 प्रतिशत हो गया।

भारत के लिए महत्वपूर्ण सेवाएं

10.13 भारत में इस सुधरते निष्पादन के लिए कुछ सेवाएं विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही हैं। सॉफ्टवेअर एक क्षेत्र है जिसमें भारत ने उल्लेखनीय वैश्विक ब्रांड की पहचान हासिल की है। भारत की सेवाओं में पर्यटन और यात्रा से संबंधित सेवाएं तथा परिवहन सेवाएं भी महत्वपूर्ण मदें हैं। इनके अतिरिक्त, संभावित और बढ़ती सेवाओं में अनेक विशेषज्ञ सेवाएं, अवसंरचना संबंधी सेवाएं एवं वित्तीय सेवाएं शामिल हैं।

सारणी 10.3 : कारक लागत पर (वर्तमान मूल्य) सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न सेवा वर्गों का हिस्सा

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09@	2009-10*
व्यापार, होटल एवं रेस्तरां	**16.1**	**16.7**	**17.1**	**17.1**	**16.9**	**16.3**
व्यापार	14.6	15.1	15.4	15.4	15.4	14.9
होटल एवं रेस्तरां	1.5	1.6	1.7	1.7	1.5	1.4
परिवहन, भंडारण, संचार	**8.4**	**8.2**	**8.2**	**8.0**	**7.8**	**7.8**
रेलवे	1.0	0.9	0.9	1.0	0.9	1.0
अन्य साधनों से परिवहन	5.7	5.7	5.7	5.5	5.5	5.2
भंडारण	0.1	0.1	0.1	0.1	0.1	0.1
संचार	1.7	1.6	1.5	1.4	1.4	1.5
वित्तपोषण, बीमा, अचल संपदा और व्यापार सेवाएं	**14.7**	**14.5**	**14.8**	**15.1**	**16.1**	**16.7**
बैंकिंग एवं बीमा	5.8	5.4	5.5	5.5	5.7	5.4
अचल संपदा, आवासीय एवं व्यापार सेवाओं का स्वामित्व	9.0	9.1	9.3	9.6	10.4	11.4
संचार, सामाजिक एवं निजी सेवाएं	**13.8**	**13.5**	**12.8**	**12.5**	**13.3**	**14.4**
लोक प्रशासन एवं रक्षा	5.9	5.6	5.2	5.1	5.8	6.3
अन्य सेवाएं	8.0	7.9	7.6	7.4	7.5	8.1
निर्माण	**7.7**	**7.9**	**8.2**	**8.5**	**8.5**	**8.2**
कुल सेवाएं (निर्माण को छोड़कर)	53.0	52.9	52.9	52.7	54.1	55.2
कुल सेवाएं (निर्माण सहित)	60.7	60.8	61.1	61.2	62.6	63.4
कुल सकल घरेलू उत्पाद	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**

स्रोतः सीएसओ

@ अनंतिम प्राक्कलन ***त्वरित प्राक्कलन**

10.14 सेवा क्षेत्र का केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन का वर्गीकरण मोटे तौर पर 4 वर्गों में आता है अर्थात् क) व्यापार, होटल और रेस्तरां; (ख) परिवहन, भंडारण और संचार; (ग) वित्तपोषण, बीमा, अचल संपदा और व्यापार सेवाएं; तथा (घ) समुदाय, सामाजिक और निजी सेवाएं। इनमें से वित्तपोषण बीमा, अचल संपदा और व्यापार सेवाओं; व्यापार; होटल और रेस्तरां सबसे बड़े समूह हैं जिनका 2009-10 में राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में क्रमशः 16.7 प्रतिशत और 16.3 प्रतिशत हिस्सा था। समुदाय, सामाजिक और निजी सेवा वर्ग का हिस्सा 14.4 प्रतिशत है जबकि परिवहन, भंडारण और संचार का हिस्सा 7.8 प्रतिशत है। निर्माण जो शामिल किए जाने के लिए सीमा पर स्थित सेवा है, का हिस्सा 8.2 प्रतिशत है (सारणी 10.3)।

सेवा क्षेत्रः अंतर्राष्ट्रीय तुलना

सेवा सकल घरेलू उत्पाद

10.15 2009 विश्व सकल घरेलू उत्पाद 64.2 प्रतिशत के समग्र हिस्से (सारणी 10.4 के साथ) सेवा क्षेत्र दुनिया भर में अर्थव्यवस्था की वृद्धि में विशेषतः उच्च आय वाली अर्थव्यवस्थाओं में प्रमुख भूमिका निभाता रहा है जो सेवा प्रधान अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हुई हैं। भारत 2009 में राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र 52 प्रतिशत हिस्से और 2009-10 में 55.2 प्रतिशत हिस्से के साथ सर्वाच्च समग्र सकल घरेलू उत्पाद वाले शीर्ष 12 विकसित देशों के साथ भी तुलना कर सकता है। अपने राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में चीन का सेवाओं का 39.2 प्रतिशत हिस्सा अपेक्षाकृत कम है जबकि कुल मिलाकर (क्योंकि इसका समग्र सकल घरेलू उत्पाद भारत के समग्र सकल घरेलू उत्पाद के तीन गुने से भी अधिक है) यह भारत से आगे हैं। सेवा वृद्धि दर के संदर्भ में चीन (10.5 प्रतिशत) और भारत (8.9 प्रतिशत) 12 शीर्ष देशों में दो सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाएं हैं। 2009 के वैश्विक संकट में जब शीर्ष 12 देशों में से अधिकांश देशों ने सेवाओं में ऋणात्मक वृद्धि दर्ज की थी, केवल चीन (9.4 प्रतिशत), भारत (6.8 प्रतिशत) और ब्राजील (2.6 प्रतिशत) ने धनात्मक वृद्धि दर्ज की थी। 2009 में वर्तमान मूल्यों का समग्र सकल घरेलू उत्पाद में भारत की विश्व रैंकिंग 11 थी और सेवा सकल घरेलू उत्पाद में यह 12 थी। सेवाओं में 11वें पायदान की ओर बढ़ते रूसी संघ और 12वें पायदान की ओर बढ़ते भारत को छोड़कर समग्र सकल घरेलू उत्पाद और सकल घरेलू उत्पाद के संदर्भ में रैंक में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ है।

सारणी 10.4 : शीर्ष 12 देशों की सेवा वृद्धि में निष्पादन

देश	रैंक		समग्र सकल घरेलू उत्पाद (अरब अमरीकी डॉलर)		सेवाओं का हिस्सा (समग्र सकल घरेलू उत्पाद का (%)			सेवा वृद्धि दर (%)			
	समग्र जीडीपी	सेवा जीडीपी	वर्तमान मूल्यों पर 2009	स्थिर मूल्यों पर 2009	2000	2008	2009	2000	2008	2009	2000-09(b)
संयुक्त राज्य	1	1	14119	12,899	74.1	76.8	76.5	3.4	0.9	-3.1	2.0
जापान	2	2	5069	4451	71.0	71.3	71.0	1.9	0.1	-5.6	0.5
चीन	3	4	4984	3544	39.0	39.1	39.2	9.7	9.5	9.4	10.5
जर्मनी	4	3	3330	2847	61.6	64.4	66.6	3.4	3.1	-1.4	1.4
फ्रांस	5	5	2649	2192	68.8	70.0	71.1	3.7	0.9	-1.1	1.5
यूके	6	6	2170	2285	65.4	69.3	70.5	4.7	0.5	-3.3	2.3
इटली	7	7	2113	1725	62.5	64.6	66.6	3.9	-0.2	-2.0	0.9
ब्राजील	8	9	1572	1021	55.5	55.8	57.3	4.0	4.8	2.6	3.6
स्पेन	9	8	1464	1182	59.3	61.9	63.6	5.2	2.3	-1.0	3.1
कनाडा	10	10	1336	1168	59.5	64.0	65.5	4.6	2.2	-0.2	2.8
भारत	11	12	1287	1141	45.9	52.4 (55.2)(a)	52.0	4.9	9.7	6.8	8.9
रूस	12	11	1231	865	50.2	52.4	54.0	6.0	7.4	-5.1	5.6
विश्व	-	-	58069	49,356	63.7	64.0	64.2	3.9	2.0	-1.6	2.5

स्रोत : 4 फरवरी, 2011 को मूल्यांकित संयुक्त राष्ट्र राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी।

टिप्पणी : रैंक वर्तमान मूल्यों पर आधारित है।
वृद्धि दरें वर्तमान मूल्यों (अमरीकी डॉलर) पर आधिरित हैं।
(क) सीएसओ, भारत के अनुसार 2009-10
(ख) सीएजीआर 2000-09 के लिए अनुमानित हैं।

सारणी 10.5 : सेवा उद्योग 2007-2009 में ग्रीनफील्ड प्रत्यक्ष विदेशी निवेश परियोजनाओं की संख्या

क्षेत्र	2007	2008	2009
होटल एवं पर्यटन	297	553	370
परिवहन, भंडारण एवं संचार	1024	1269	1133
संचार	448	594	544
वित्तीय सेवाएं	1161	1616	1267
व्यापार सेवाएं	2922	3647	2927

स्रोत: अंकटाड, विश्व निवेश रिपोर्ट 2010

सेवा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश

10.16 वैश्विक आर्थिक और वित्तीय संकट का सीमा पार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह पर अवमंदन प्रभाव पड़ा। यद्यपि इस संकट का विनिर्माण कार्यों के लिए प्रवाह पर भारी प्रभाव पड़ा, सेवा क्षेत्र भी प्रभावित हुआ था। संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन (अंकटाड) के अनुसार क्षेत्रों पर इस संकट के प्रभाव से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में प्राथमिक और सेवा क्षेत्रों के मुकाबले विनिर्माण क्षेत्र को अधिक महत्व मिला। कुल सीमा पार विलयन और अधिग्रहण में विनिर्माण का हिस्सा विकासशील देशों में — 2009 में उनके मूल्य पर यह 30 प्रतिशत था - विकासशील देशों और परिवर्तनशील अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले कम था जहां यह कारोबार मूल्यों का 32 प्रतिशत था। दूसरी ओर, मूल्य की दृष्टि से कुल सीमा पार विलयन और अधिग्रहण में प्राथमिक क्षेत्र और सेवाओं का हिस्सा विकासशील देशों और परिवर्तनशील अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले विकसित देशों में अधिक था। व्यापार सेवाएं ऐसे क्षेत्रों में शामिल थी जहां निवेश संबंधी व्यय पर इस संकट का गंभीर प्रभाव पड़ा था और पिछली वर्ष की तुलना में 2009 में विश्व में ग्रीन फील्ड निवेश परियोजनाओं में 20 प्रतिशत तक की कमी दर्ज हुई। वित्तीय सेवाओं में ग्रीन फील्ड निवेश 2009 में 1267 हो गया जबकि 2008 में यह 1616 था (सारणी 10.5)।

10.17 सकारात्मक पक्ष की ओर, वैश्विक स्तर पर, सेवा क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय निवेश के अपेक्षाकृत तेजी से बढ़ने की संभावना के साथ सेवाओं के लिए मध्यकालिक संभावनाएं विनिर्माण क्षेत्र की संभावनाओं से सामान्यत: बेहतर हैं। इसके अतिरिक्त, अनेक सेवा ट्रांसनेशनल कंपनियां जो कुछ वर्ष पहले अपने घरेलू बाजारों पर ध्यान केन्द्रित कर रही थी, अब विदेशों में महत्वाकांक्षी निवेशों को शामिल करते हुए अंतर्राष्ट्रीयकरण की रणनीतियों पर काम कर रही हैं। विशेषत: एशिया में विकासशील और परिवर्तनशील अर्थव्यवस्थाओं को सर्वाधिक आकर्षक स्थल माना जाता है।

सेवा व्यापार

10.18 भारत ने सेवाओं में व्यापार में काफी प्रगति की है जिस पर विकासशील देशों का आधिपत्य था और 2009 में विश्व के शीर्ष 12 सेवा निर्यातक देशों में शामिल था। यद्यपि, भारत की 12वीं रैंक (विवरण के लिए अध्याय 7 देखें) के मुकाबले 5वीं रैंक के साथ चीन काफी आगे है।

भारत का सेवा डाटा

10.19 सेवा क्षेत्र के संबंध में डाटा एकत्र करना देश के सामने एक महत्वपूर्ण चुनौती है। डाटा एकत्र करने में चुनौती से सेवा क्षेत्र के उत्पादन के लिए एक सूचकांक का संकलन करने में कठिनाई होती है, थोक मूल्य सूचकांक की गणना में अनेक सेवा क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व नहीं है, सेवाओं के मूल्य निर्धारण के सबंध में प्रकाशित डाटा की उपलब्धता सीमित है, सेवाओं में व्यापार के बारे में डाटा सीमित है। जहां डाटा उपलब्ध भी है वहां परिभाषा, संग्रहण की विधि, मूल्य निर्धारण के लिए उपयोगिता तथा सूचकांकों के निर्माण के संबंध में खामियां हैं।

10.20 अभी हाल में सेवा डाटा एकत्र करने के लिए कुछ प्रयास किए गए हैं (बॉक्स 10.1 देखें)। यद्यपि इन प्रयासों में तेजी लाई जानी है, समन्वय में और अधिक प्रयास जरूरी हैं।

उप-क्षेत्रों का निष्पादन

10.21 दो तेजी से बढ़ते व्यापक सेवा वर्ग हैं: क) वित्तपोषण, बीमा, अचल संपदा और व्यापार सेवा; तथा ख) परिवहन, भंडारण और संचार। बाद वाला सेवा वर्ग 15 प्रतिशत उच्च वृद्धि के साथ 2009-10 में पहले वर्ग से आगे निकल गया (सारणी 10.6)। तीसरे वर्ग व्यापार, होटल और रेस्तरां की वृद्धि में 2008-09 में गिरावट आई और 2009-10 में इसने मामूली सुधार किया है। चौथे वर्ग, समुदाय, सामाजिक एवं निजी सेवाओं में 2008-09 में अचानक वृद्धि दर्ज की गई और यह सभी अन्य वर्गों से आगे निकल गया जो लोक प्रशासन और रक्षा में उच्च वृद्धि का द्योतक है। सामाजिक क्षेत्र के कार्य के राजकोषीय प्रोत्साहन को प्रदर्शित करते हुए अन्य सेवाओं की वृद्धि में अचानक बढ़ोतरी के कारण लोक प्रशासन और रक्षा (सरकारी कर्मचारियों के नए संशोधित वेतनमानों की बकाया राशि की प्रतिबद्धता के साथ) में वृद्धि में गिरावट के

बॉक्स 10.1: सेवा डाटा एकत्र करने के लिए हाल के कुछ प्रयास

1. सेवा डाटा सूचकांक: मूल्य विस्तार और रोजगार सृजन दोनों के संदर्भ में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का योगदान पिछले कुछ वर्षों से बढ़ रहा है। तथापि, इस विशाल और विषम क्षेत्र की गतिशीलता की माप के लिए कोई अल्पकालिक संकेत नहीं हैं। इस अंतर को पूरा करने के लिए सीएसओ द्वारा सेवा उत्पादन सूचकांक का संकलन किया जा रहा है। रेलवे, विमान परिवहन और पतन के लिए सूचकांक पूरे कर लिए गए हैं।

2. सेवा मूल्य सूचकांक: सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा गठित डा. रंगराजन आयोग (2001) ने अलग सेवा मूल्य सूचकांक के संकलन की सिफारिश की थी जिसे स्थिरीकरण और उसकी सुदृढ़ता की प्रामाणिकता के पश्चात् अंतत: थोक मूल्य सूचकांक में मिला दिया जाना चाहिए। प्रायोगिक सेवा मूल्य सूचकांक के विकास के लिए प्रथम चरण में दस क्षेत्रों अर्थात् बैंकिंग, व्यापार, व्यापार सेवा, डाक सेवा, दूरसंचार, विमान परिवहन, पतन सेवाओं, बीमा, रेल परिवहन और सड़क परिवहन की पहचान की गई है। सात क्षेत्रों अर्थात् रेलवे, व्यापार सेवा, कारोबार सेवा, बैंकिंग, दूरसंचार, डाक सेवा और विमान परिवहन के लिए सेवा मूल्य सूचकांक विकसित करने की कार्यविधि को अंतिम रूप दे दिया है। सूचकांक के स्वरूप, शामिल किए जाने वाले उत्पादन और महत्व आरेख को शामिल करते हुए विशेषज्ञ समिति द्वारा अनुमोदित क्षेत्र विशिष्ट कार्यविधि के लिए एक साझा प्रपत्र तैयार किया गया है। प्रायोगिक आधार पर सेवा मूल्य सूचकांक का निर्माण क्रमश: किया जाना है जिसकी शुरूआत बैंकिंग सेवाओं और रेल परिवहन के सूचकांक से की जाएगी।

3. सेवा डाटा व्यापार: सेवा व्यापार के मोर्च पर भी कुछ विकास हुआ है। भारतीय रिजर्व बैंक शेष भुगतान कार्य समूह मैनुअल की सिफारिशों के अनुसार हाल के वर्षों में अपेक्षाकृत अधिक डिसएग्रीगेट स्तर पर सेवाओं से संबंधित डाटा प्रदान करती रही है, भारतीय रिजर्व बैंक अप्रैल, 2011 से 45 दिनों के अंतराल के साथ सेवा व्यापार संबंधी एग्रीगेट डाटा भी प्रदान करेगी अर्थात् अप्रैल, 2011 के डाटा 15 जून, 2011 को उपलब्ध होंगे। कार्य समूह ने सुझाव दिया था कि सेवा संबंधी डिसएग्रीगेट डाटा तिमाही आधार पर जारी किए जाने चाहिएं। अनुवर्ती कार्यवाही के तौर पर, भारतीय रिजर्व बैंक ने 2010-11 की प्रथम तिमाही से शुरूआत करते हुए सेवा में डिसएग्रीगेट तिमाही व्यापार डाटा जारी करना प्रारंभ कर दिया है जो आरबीआई के बुलेटिन के फरवरी, 2011 के अंत में प्रकाशित किया जा चुका है। वाणिज्य विभाग द्वारा गठित अंतर्राष्ट्रीय सेवा व्यापार से संबंधित संयुक्त समिति ने 2001 में अपनी रिपार्ट प्रस्तुत कर दी थी और 2010 में सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा सेवाओं में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार डाटा के नियमित संग्रहण और संकलन के लिए संस्थागत तंत्र के सुदृढ़ीकरण से संबंधित एक विशेषज्ञ समूह का गठन किया गया है।

सारणी 10.6 : घटक लागत पर (स्थिर कीमतों पर) भारत की सेवाओं के सकल घरेलू उत्पाद में वार्षिक वृद्धि सारणी

(प्रतिशतता)

	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09*	2009-10**
कारोबार, होटल एवं रेस्तरां	**12.2**	**11.0**	**10.0**	**5.5**	**6.7**
कारोबार	11.7	10.7	9.7	6.5	7.2
होटल एवं रेस्तरां	17.5	14.4	13.1	-3.1	2.2
परिवहन, भण्डारण एवं संचार	**12.2**	**12.7**	**12.9**	**11.1**	**15.0**
रेलवे	7.5	11.1	9.8	7.6	9.4
अन्य साधनों द्वारा परिवहन	9.3	9.0	8.7	5.2	7.0
भंडरण	4.7	10.9	3.4	10.5	10.7
संचार	25.5	24.9	25.4	25.8	32.1
वित्तपोषण, बीमा, संपदा एवं					
व्यापार सेवाएं	**12.7**	**14.0**	**11.9**	**12.5**	**9.2**
बैंकिंग एवं बीमा	15.9	20.6	16.7	14.0	11.3
संपदा, आवासों का स्वामित्व तथा					
व्यापार सेवाएं	10.6	9.5	8.4	11.2	7.5
समुदाय, सामाजिक एवं वैयक्तिक सेवाएं	**7.0**	**2.9**	**6.9**	**12.7**	**11.8**
लोक प्रशासन एवं रक्षा	4.2	2.0	7.6	20.2	13.0
अन्य सेवाएं	9.1	3.5	6.3	7.4	10.9
विनिर्माण	12.8	10.3	10.7	5.4	7.0
कुल सेवाएं (विर्निमाण को छोड़कर)	11.0	10.1	10.3	10.1	10.1
कुल सेवाएं (विर्निमाण सहित)	11.2	10.1	10.4	9.5	9.7
समग्र जीडीपी	**9.5**	**9.6**	**9.3**	**6.8**	**8.0**

स्रोत : सीएसओ

टिप्पणियां: *अनंतिम अनुमान।

****त्वरित अनुमान।**

बावजूद 2009-10 में इस श्रेणी में तेज वृद्धि जारी रही (सारणी 10.8 देखें)। उपवर्गों में, 2008-09 में संचार (25.8%), लोक प्रशासन एवं रक्षा (20.2%), बैंकिंग और बीमा (14% और भंडारण (10.5%), द्वारा डबल-डिजिट में वृद्धि दर्ज की गई। केवल होटलों और रेस्तरां (-3.1%) द्वारा ऋणात्मक वृद्धि दर्ज की गई थी। व्यापार सेवाओं में, सकल घरेलू उत्पाद में क्रमशः 3.26% और 0.88% हिस्से के साथ दो महत्वपूर्ण सेवाएं कंप्यूटर संबंधी सेवाएं हैं, जिनमें अनुसंधान और विकास सेवाएं, बाजार अनुसंधान, व्यापार एवं प्रबंधन परामर्शी, वास्तुशिल्प इंजीनियरी और विज्ञापन शामिल हैं। कंप्यूटर संबंधी सेवाओं में जो 2008-09 में 21.2% तक बढ़ीं। वैश्विक संकट के कारण 2009-10 में 5.2% की मामूली वृद्धि दर्ज हुई, अनुसंधान और विकास सेवाओं ने 2008-09 और 2009-10 में क्रमशः 19.6% और 19.9% की अच्छी वृद्धि दर्ज की। अन्य सेवाओं में सकल घरेलू उत्पाद के हिस्से के संदर्भ में शिक्षा और स्वास्थ्य महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिसमें 2009-10 में पहले क्षेत्र ने 13.9% और दूसरे ने 5.3% की वृद्धि दर्ज की। अन्य सभी सेवाएं भारत के सकल घरेलू उत्पाद में कम महत्व रखती हैं। यद्यपि, निर्माण सहित सभी सेवाएं 9.7% तक बढ़ीं, 2009-10 में निर्माण को छोड़कर सभी सेवाएं 10.1% तक बढ़ीं। 2010-11 (अग्रिम अनुमान) में वे क्रमशः 9.4% और 9.6% तक बढ़ीं।

10.22 दो व्यापक सेवा वर्ग अर्थात् व्यापार, होटल, परिवहन और संचार; तथा वित्तपोषण, बीमा, अचल संपदा और व्यापार सेवाओं जिनमें अनेक गतिशील सेवाएं शामिल हैं, ने 2010-11 (अग्रिम अनुमान) में क्रमशः 11 प्रतिशत और 10.6 प्रतिशत वृद्धि के साथ अच्छा निष्पादन किया है। केवल समुदाय, सामाजिक और निजी सेवाओं ने पिछले 2 वर्षों में राजकोषीय प्रोत्साहन के आधार प्रभाव के कारण 5.7 प्रतिशत की निम्न वृद्धि दर्ज की है और इस तरह सेवा क्षेत्र की वृद्धि में मामूली गिरावट में योगदान दिया है। निर्माण क्षेत्र में 8 प्रतिशत की मामूली वृद्धि हुई।

10.23 भारत में विभिन्न सेवाओं से संबंधित विभिन्न संसूचकों की तुलना दूरसंचार, विमानन तथा रेलवे जैसी सेवाओं में अच्छे कार्य निष्पादन को दर्शाती है। भंडारण सेवाएं भाण्डागारों की संख्या में आई गिरावट को दर्शाती है जोकि विभिन्न स्थानों में मांग और आपूर्ति की मात्र एक झलक है (सारणी 10.7)। सीमित व्यवस्था स्तर के लेकिन अपूर्ण आंकड़ों पर आधारित तथा प्राक्कलनों और पूर्वानुमानों पर आधारित सेवा क्षेत्र का कार्य-निष्पादन तथा दृष्टिकोण वर्ष 2010-11 तथा 2011-12 में सेवाओं के कार्यकलापों में संतुलित कार्य-निष्पादन को भी दर्शाता है (बॉक्स 10.2 देखें)।

कुछ प्रमुख सेवाओं का निष्पादन

व्यापार

10.24 भारत की जीडीपी में व्यापार महत्वपूर्ण खण्ड है। स्थिर कीमतों पर व्यापार (संगठित तथा असंगठित क्षेत्रों में थोक तथा खुदरा बाजार को मिलाकर) से जीडीपी 9.1 प्रतिशत की सीएजीआर पर 2004-05 में 4,33,967 करोड़ ₹ से बढ़कर 2009-10 में 6,71,396 करोड़ ₹ हो गया। तथापि जीडीपी में व्यापार का भाग विगत चार वर्षों में लगभग 15 प्रतिशत से कुछ अधिक पर स्थिर रहा है।

सारणी 10.7 : भारत के सेवा क्षेत्र का निष्पादनः कुछ संसूचक

क्षेत्र	संसूचक	इकाई	अवधि			
			2007-08	2008-09	2009-10	2010-11
विमान	विमान यात्री (घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय)	मिलियन	53.49	49.5	56.94	
दूरसंचार	दूरसंचार संपर्क (वायरलाइन और वायरलेस)	लाख	3004.92	4297.25	6212.8	7647.6(ख)
पर्यटन	विदेशी पर्यटक आगमन	मिलियन	5.08(अ)	5.28(अ)	5.11(अ)	5.58(क)
	पर्यटकों के आगमन से विदेशी विनिमय का अर्जन	मिलियन	10,729(अ)	11,750(अ)	11,394(अ)	14,193(अ)
पोत परिवहन	भारतीय पोत परिवहन का सकल टनभार	मिलियन	8.84(अ)	9.31(अ)	9.39(अ)	10.1(ब)
	जलयानों की संख्या	संख्या	867	925	1003	
पत्तन रेलवे	पत्तन यातायात	मिलियन टन	521.47	532.53	562.74	416.61(ग)
	रेलवे द्वारा भाड़ा यातायात	मिलियन टन	804.11	833.31	887.99	673.31(घ)
	रेलवे के निवल टन किलोमीटर	मिलियन	523,000	538,226	584,760	444,515(घ)
भंडारण	भंडारण क्षमता	मी. टन	98.78	105.25	105.98	
	भांडागारों की संख्या	संख्या	490	499	487	

स्रोतः नागर विमानन महानिदेशालय; भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण पर्यटन मंत्रालय; पोत परिवहन मंत्रालय; रेल मंत्रालय; केन्द्रीय भंडागार निगम/भारतीय एग्ज़िम बैंक द्वारा संकलित।

टिप्पणियां: (क) कैलेण्डर वर्ष, उदाहरण के लिए 2007 के 2007-08।

(ख) अप्रैल-नवम्बर।

(ग) 01 सितम्बर 2010 की स्थिति के अनुसार।

(घ) अप्रैल-अक्तूबर।

(ङ) अप्रैल-दिसम्बर।

बॉक्स 10.2 : सेवा फर्मों का निष्पादन: एक क्षेत्रीय विश्लेषण

सेन्टर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी (सीएमआईई) का फर्म स्तर के आंकड़ों पर आधारित सेवा कार्यकलापों के क्षेत्र-वार निष्पादन का विश्लेषण यहां दिया गया है। 2010-11 और 2011-12 के आंकड़े प्राक्कलनों तथा पूर्वानुमानों पर आधारित हैं।

परिवहन प्रचालन-तंत्र: परिवहन प्रचालन-तंत्र सेवा उद्योग की बिक्रियां वर्ष 2009-10 के दौरान लाभप्रद 7.2 प्रतिशत की दर से बढ़नी अनुमानित हैं। यह वृद्धि उच्चतर कार्गो प्रमात्रा तथा बेहतर वसूलियों के संयोजन से प्राप्त की जानी संभावित है। 2010-11 में समग्र रूप से इस क्षेत्र की बिक्रियों में 13 प्रतिशत तथा कर उपरांत लाभ (पीएटी) में 11 प्रतिशत की वृद्धियां अनुमानित हैं।

पोत परिवहन: 2010-11 में पोत परिवहन क्षेत्र की बिक्रिया 3 प्रतिशत तक गिरनी अनुमानित हैं। वर्ष की दूसरी छमाही के दौरान भाड़ा दरों के कम रहने की संभावना है। लगातार दो साल की गिरावट के बाद, कार्गो प्रमात्रा में धीमी बहाली तथा भाड़ा दरों में सुधार के साथ 2011-12 में बिक्रियों में 3.2 प्रतिशत की वृद्धि अनुमानित है। तथापि, मूल्यह्रास प्रभारों तथा ब्याज खर्चों जिनके बारे में यह संभावना है कि ये उद्योग के प्रचालन लाभों केमुख्य भाग को चट कर जाएंगे, में क्रमश: 12.6 प्रतिशत तथा 13.7 प्रतिशत में तीव्र वृद्धि के साथ 2011-12 में उद्योग के पीएटी के 3.3 प्रतिशत तक गिरने की आशंका है। दो वर्षों के दौरान अपने बेड़े में महत्वपूर्ण टनभार वृद्धि भी इन खर्चों में बढ़ोतरी को प्रभावित करेगी, इसकी संभावना है।

नागर विमानन: तेल विपणन कंपनियों ने 1 जनवरी, 2011 को शुरू हुए पखवाड़े के लिए विमान टरबाइन ईंधन (एटीएफ) मूल्यों में बढ़ोतरी कर दी है। एक महीने पहले तदनुरुपी पखवाड़े की तुलना में मुंबई में एटीएफ मूल्य 5.9 प्रतिशत बढ़कर 48,059 ₹ प्रति किलोलीटर हो गया। यह जनवरी 2010 में औसत एटीएफ मूल्य की तुलना में 16.6 प्रतिशत अधिक था। वर्ष 2010-11 में समग्र रूप से, बिक्रियों की 25.9 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना है। इस बढ़ोतरी की वजह यात्रियों की संख्या में अपेक्षित बढ़ोतरी तथा बढ़े हुए एटीएफ मूल्यों का भार यात्रियों पर डालना है। 2011-12 में, बिक्री के लाभप्रद 14 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना है।

खुदरा क्षेत्र: खुदरा क्षेत्र द्वारा 2010-11 में लाभप्रद बिक्री दर्ज की जानी अपेक्षित है और 2011-12 में 10.2 प्रतिशत की वृद्धि अनुमानित है। खर्च के मुकाबले आय में तीव्र वृद्धि के कारण अगले तीन वर्षों के दौरान इस क्षेत्र के पीएटी मार्जिन में बढ़ोतरी होने की आशा है। मार्च 2011 में समाप्त होने वाले वर्ष के लिए 8281 करोड़ ₹ की परियोजनाएं पूरी होने की आशा है जिससे 115.1 लाख स्केवयर फीट खुदरा बाजार का क्षेत्र और बढ़ जाएगा। 2011-12 के दौरान 24,143 करोड़ ₹ की परियोजनाएं पूरी हो जाने की आशा है जिससे 168.6 लाख स्केवयर फीट जगह की क्षमता में वृद्धि हो जाएगी।

स्वास्थ्य सेवाएं: स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र की बिक्री 2010-11 में लाभप्रद 25.6 प्रतिशत तक तथा 2011-12 में 19.8 प्रतिशत तक बिक्री में अच्छी बढ़ोतरी होने की वजह से बढ़ने की आशा है। व्यय की तुलना में आय में तीव्र वृद्धि के कारण सितम्बर 2010-11 में समाप्त होने वाली तिमाही में इस क्षेत्र का पीएटी जबरदस्त 107.1 प्रतिशत तक बढ़ जाएगा और 2010-11 में 45 प्रतिशत की दर से बढ़ने की आशा है।

होटल: वर्ष 2009-10 में पिछड़ने के बाद, होटल क्षेत्र की बिक्री अधिक लोगों द्वारा होटल में ठहरने तथा औसत कमरा दर (एआरआर), दोनों के कारण 2010-11 में 18.1 प्रतिशत की दर में बढ़ने की संभावना है। हालांकि, होटल के कमरों में 2011-13 में और बढ़ोतरी होने से एआरआर नियंत्रित ही रहेगा, फिर भी 2011-12 में बिक्री 15.1 प्रतिशत की दर से बढ़नी अपेक्षित है।

दूरसंचार: 2009-10 के दौरान मात्र 2.2 प्रतिशत की दर से बढ़ने के बाद दूरसंचार उद्योग की बिक्री वृद्धि में बहाली देखने को मिली और 2010-11 की पहली छमाही के दौरान सुधार हुआ। बिक्री की वृद्धि में यह बहाली जारी रहने की आशा है। उपभोक्ता आधार में बढ़ोतरी तथा औसत राजस्व प्रति प्रयोक्ता (एआरपीयू) और उपयोग के मिनट प्रति प्रयोक्ता (एमओयू) दोनों की गिरावट की गति में कमी के चलते वर्ष 2010-11 तथा 2011-12 के दौरान, बिक्री क्रमश: 11.4 प्रतिशत तथा 14.6 प्रतिशत की दर से बढ़ने की आशा की जाती है।

सॉफ्टवेयर: भारतीय सॉफ्टवेयर उद्योग मुख्यत: निर्यातोन्मुखी है। यह उद्योग कुल राजस्व का लगभग 60-70 प्रतिशत अपने दो सबसे बड़े बाजारों अमरीका और यूरोप से एकत्र करता है। इन प्रमुख निर्यात गन्तव्यों में आर्थिक मंदी के चलते भारतीय सॉफ्टवेयर उद्योग की बिक्री की वृद्धि की गति 5.9 प्रतिशत तक कम हुई। तथापि, उच्चतर ग्राहक वृद्धि तथा बिलिंग दरों में बढ़ोतरी की वजह से 2010-11 तथा 2011-12 के दौरान बिक्री क्रमश: 16.9 प्रतिशत तथा 17.8 प्रतिशत की दर से बढ़नी अपेक्षित है।

विनिर्माण तथा संबद्ध क्रियाकलाप: विनिर्माण उद्योग की बिक्री में 2010-11 की दूसरी छमाही में वृद्धि होने की आशा है। अवसंरचना सृजन पर सरकार द्वारा बल दिए जाने के कारण, औद्योगिक और अवसंरचना निर्माण खण्डों में कार्यकलापों में बढ़ोतरी होने के कारण, इस क्षेत्र की बिक्री वृद्धि में 2010-11 तथा 2011-12 में क्रमानुसार 20.2 प्रतिशत तथा 21.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी की आशा है।

स्रोत: सीएमआईई उद्योग विश्लेषण पर आधारित भारतीय एग्ज़िम बैंक द्वारा संकलित

10.25 पिछला दशक वास्तविक जीडीपी की वृद्धि दर में तीव्र वृद्धि का साक्षी रहा है। पिछले पांच वर्षों के दौरान यह 8-9 प्रतिशत के आस-पास रही है। इस तीव्र वृद्धि का मतलब है जनसंख्या, खासकर मध्यम वर्ग द्वारा आय को अधिक से अधिक खर्च किया जाना। उपभोग करने वाली जनसंख्या में वृद्धि के साथ, खुदरा व्यापार को भी बढ़ावा मिला। देश में खुदरा व्यापार क आकार के कोई आधिकारिक प्राक्कलन मौजूद नहीं हैं, यद्यपि इस तरह के प्राक्कलन कुछ संस्थाओं द्वारा किए गए हैं। एनएसएसओ

सर्वेक्षण को उद्धृत करते हुए द इंटरनेशनल काउंसिल फॉर रिसर्च ऑन इंटरनेशनल इकॉनमी रिलेशंस (आईसीआरआईईआर) के 2008 के अध्ययन के अनुसार खुदरा व्यापार में 35.06 मिलियन लोगों को रोजगार मिला हुआ है जो देश में कार्यक्षमता का 7.3 प्रतिशत है। खुदरा व्यापार में रोजगार में तेजी के आधार पर जीडीपी में खुदरा क्षेत्र का योगदान 10 से 12 प्रतिशत के आस-पास अनुमानित है। लघु तथा विकेन्द्रीकृत कारोबारियों की बहुत बड़ी संख्या भारतीय खुदरा परिदृश्य पर अपना प्रभुत्व रखती है। एक अनुमान के अनुसार उनकी संख्या 1.3 करोड़ है। संगठित कॉरपोरेट सेक्टर ने खुदरा व्यापार में दिलचस्पी दिखानी शुरू की है। जीडीपी में तीव्र वृद्धि तथा उपभोग करने वाले वर्गों के द्वारा आय का अधिक से अधिक इस्तेमाल करने के साथ, खुदरा व्यापार (अर्थात संगठित खुदरा व्यापार) का आधुनिक प्रारूप घरेलू और विदेशी निवेश को आकर्षित कर रहा है (बॉक्स 10.3)।

होटलों तथा रेस्तरां सहित पर्यटन

10.26 भारत समेत विश्व के अधिकतर भागों में पर्यटन आर्थिक प्रगति का प्रमुख इंजन है। चूंकि पर्यटन राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी में एक शीर्ष के अंतर्गत नहीं आता है, इसलिए इसके योगदान का अनुमान लगाया जाता है। वर्ष 2007-08 में, देश के जीडीपी तथा देश में कुल नौकरियों (प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष) में पर्यटन का योगदान क्रमश: 5.92 प्रतिशत तथा 9.24 प्रतिशत अनुमानित था। पूर्ण अंकों में, देश में पर्यटन से जुड़ी नौकरियों की कुल संख्या 2002-03 में 38.6 मिलियन से बढ़कर 2007-08 में 49.8 मिलियन हो गई। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के मुताबिक, पर्यटन विश्व की कुल नौकरियों का 6 प्रतिशत से 7 प्रतिशत प्रत्यक्ष रूप से तथा इस सेक्टर में प्रवर्धक प्रभाव के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से कई मिलियन और नौकरियां प्रदान करता है। पर्यटन देश के विदेशी विनिमय अर्जनों में एक अहम भूमिका निभाता है, क्योंकि 2009-10 में सेवा के कुल निर्यात में भारत के सेवा निर्यात का भाग 13 प्रतिशत था।

10.27 भारत में, पर्यटन सेक्टर हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण वृद्धि का साक्षी रहा है। 2004 से 2009 की अवधि के दौरान, रुपए के संदर्भों में पर्यटन से विदेशी पर्यटक आगमन की सीएजीआर तथा विदेशी विनिमय अर्जन क्रमश: 8.1 प्रतिशत तथा 14.5 प्रतिशत थी। जहां 2008 में भारत में 5.28 मिलियन विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ था, वहीं 2009 में वैश्विक मंदी के कारण यह आंकड़ा गिरकर 5.11 मिलियन पर आ गया। 2009 के पहले ग्यारह महीनों में जहां नगण्य अथवा कम वृद्धि दरें अर्ज की गई थीं, इन पर्यटकों के आगमन से 21 प्रतिशत की अच्छी वृद्धि के साथ दिसम्बर 2009 से बहाली होनी शुरू हो गई। वर्ष 2010 में 9.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 5.58 मिलियन पर्यटकों के आगमन से यह बहाली बरकरार रही। 2009 में आई 3.3 प्रतिशत की गिरावट की तुलना में रुपए के संदर्भ में वर्ष 2010 में पर्यटन से विदेशी विनिमय अर्जनों में विगत वर्ष के दौरान 18.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई। देश में पर्यटन के समग्र विकास में घरेलू पर्यटन भी अहम भूमिका निभाता है। 2008 में 562.8 मिलियन घरेलू भ्रमणों की तुलना में 2009 में घरेलू पर्यटक भ्रमणों की संख्या बढ़कर 650 मिलियन हो गई जो इस अवधि के दौरान विभिन्न विपरीत कारकों के बावजूद 15.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करती है।

10.28 होटल तथा रेस्तरां पर्यटन सेक्टर का महत्वपूर्ण उप-घटक है। अच्छी गुणता वाले तथा होटल के किफायती कमरे देश में पर्यटन की वृद्धि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। सम्प्रति, देश में 95,087 कमरों की क्षमता के साथ 1593 वर्गीकृत होटल हैं। होटल सेक्टर में आवास के विभिन्न प्रकार शामिल हैं, नामत: स्टार कैटेगरी होटल, हेरीटेज कैटेगरी होटल, टाइमशेयर रिज़ार्ट्स, अपार्टमेंट होटल, गेस्ट हाउसिज तथा बेड एंड ब्रेकफास्ट संस्थापनाएं। होटल तथा रेस्तरां का समग्र अर्थव्यवस्था में भाग 2004-05 में 1.46 प्रतिशत से बढ़कर 2007-08 में 1.69 प्रतिशत हो गया और फिर 2008-09 तथा 2009-10 में गिरकर क्रमश: 1.53 प्रतिशत तथा 1.45 प्रतिशत हो गया। जीडीपी में

बॉक्स 10.3 : भारत तथा अन्य देशों में खुदरा व्यापार में एफडीआई

भारत में, खुदरा व्यापार राज्य का विषय है। इसके विनियमन तथा विकास के लिए कोई राष्ट्रीय ढांचा नहीं है और राज्यों के खुद के विनियमन हैं। केन्द्रीय स्तर पर सेक्टर में केवल एफडीआई के प्रवाह को विनियमित किया जाता है। यद्यपि कैश एण्ड कैरी थोक व्यापार में एफडीआई भारत में अनुमत्य है, बहु-ब्रैंड खुदरा व्यापार में एफडीआई निषिद्ध है। एकल-ब्रैंड खुदरा व्यापार में एफडीआई 2006 से 51 प्रतिशत तक अनुमत्य है। मई 2010 तक कुल 94 प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं, जिसमें से 57 अनुमोदित हैं। अप्रैल 2006 से मार्च 2010 तक की अवधि के दौरान 194.69 मिलियन अमरीकी डॉलर मूल्य के एफडीआई अंतर्वाह इस सेक्टर में आए हैं, जो इस अवधि के दौरान कुल एफडीआई अंतर्वाह के 0.21 प्रतिशत के बराबर हैं।

खुदरा व्यापार में एफडीआई साम्या भागीदारी में बिना सीमा के ब्राजील, अर्जेंटीना, सिंगापुर, इंडोनेशिया, चीन तथा थाईलैंड में अनुमत्य है, जबकि मलेशिया में खुदरा व्यापार में एफडीआई पर साम्या की सीमा है। महानगरों से आरंभ करते हुए खुदरा व्यापार में एफडीआई की अनुमति चरणबद्ध तरीके से तथा मौजूदा खुदरा बिक्री केन्द्रों को आधुनिक होने के लिए प्रेरित करने में कृषकों तथा उपभोक्ताओं के सरोकारों का समाधान करने में मदद मिलेगी। खुदरा व्यापार में एफडीआई तकनीकी जानकारी लाने में भी सहायता कर सकती है ताकि कुशल आपूर्ति श्रृंखला हो सके जो विकास के आदर्शों के रूप में कार्य कर सकते हैं।

स्रोत: औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग के चर्चा पत्र 'बहु-ब्रैंड खुदरा व्यापार में एफडीआई' उपभोक्ता मामले विभाग के इन्पुट्स तथा वर्किंग पेपर नं. 1,2010 आर्थिक कार्य विभाग पर आधारित।

होटल और रेस्तरां सेक्टर द्वारा योगदान किए गए सीएजीआर का प्रतिशत 2004-05 से 2009-10 तक 8.5 प्रतिशत था। तथापि, वर्ष 2007-08 की तुलना में 2008-09 में ऋणात्मक वृद्धि (-3.41 प्रतिशत) हुई थी, जो इस वर्ष में विपरीत वैश्विक आर्थिक परिस्थितियों के कारण हुई थी, जबकि 2009-10 में सेक्टर ने 2.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। कई अध्ययनों ने भारत में होटल कमरों में मांग-आपूर्ति के अंतर की पहचान की है; जिनमें से कुछ अध्ययनों ने 150,000 होटल कमरों के अंतर का अनुमान लगाया है, जिसमें से 100,000 कमरे बजट खण्ड में हैं। चूंकि होटलों का निर्माण मुख्यत: निजी क्षेत्र की और लम्बी निर्माण अवधि वाली सघन पूंजीगत क्रिया है, सरकार इस सेक्टर में निवेश प्रोत्साहित करने तथा अनुमोदन प्रक्रिया को गतिशील बनाने के लिए प्रयास कर रही है।

10.29 होटल शुरू करने की कार्यवाहियों के लिए संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के सभी विश्व विरासत स्थलों (मुंबई और दिल्ली को छोड़कर) में अवस्थित दो, तीन तथा चार सितारा वर्ग के होटलों के लिए आयकर अधिनियम के अंतर्गत पंच-वर्षीय कर छूट सहित सरकार द्वारा आतिथ्य क्षेत्र के लिए 1 अप्रैल 2008 से 31 मार्च 2013 तक विभिन्न वित्तीय और राजकोषीय प्रोत्साहनों की घोषणा की गई है; राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के कुछ पड़ोसी जिलों में 1 अप्रैल 2007 तथा 31 जुलाई 2010 के बीच खुलने वाले दो, तीन तथा चार सितारा वर्ग के नए होटलों तथा सम्मेलन केन्द्रों के लिए पंच-वर्षीय कर छूट 2007-08 में घोषित की गई है। अन्य प्रोत्साहनों में: नई होटल परियोजनाओं की स्थापना के लिए होटल उद्योग को पेश आ रही नकदी की दिक्कतों को कम करने के लिए बाह्य वाणिज्यिक उधारों (ईसीबी) की छूट; होटल तथा पर्यटन-संबंधी उद्योग के लिए स्वचालित रूट के तहत 100 प्रतिशत तक की एफडीआई की अनुमति; होटल परियोजनाओं को वाणिज्यिक संपदा से मिलने वालों उधारों को आरबीआई द्वारा अलग करना उसके द्वारा होटल परियोजनाओं को रियायती मानदंडों और कम ब्याज दरों पर उधार उपलब्ध कराना तथा समस्त भारत में 2-सितारा वर्ग और उससे ऊपर के नए होटलों को स्थापित करने के लिए केन्द्रीय बजट 2010-11 में घोषित आयकर अधिनियम की धारा 35डी के अंतर्गत निवेश-संबद्ध कटौती करना, इस प्रकार पूंजीगत पूरे अथवा किसी व्यय के बारे में 100 प्रतिशत कटौती की अनुमति देना शामिल है। सरकार के पास प्रामाणिक पर्यटन ऑपरेटरों, ट्रेवल एजेन्टों, पर्यटन परिवहन ऑपरेटरों तथा एडवेंचर पर्यटन ऑपरेटरों जो कुल बिक्री, अवसंरचना तथा जनशक्ति के संदर्भ में विनिर्दिष्ट कुछ मानदण्डों को पूरा करते हैं, को अनुमोदन प्रदान करने की स्वैच्छिक स्कीम भी है।

10.30 चूंकि आधारभूत ढांचे का विकास पर्यटन सेक्टर में भारत की धारणीय प्रगति हेतु अत्यंत महत्व रखता है, सरकार पर्यटक गन्तव्यों और सर्किटों पर गुणतायुक्त पर्यटन अवसरंचना विकसित करने के प्रयास कर रही है। विशाल परियोजनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय महत्व के गन्तव्य स्थलों तथा सर्किटों के विकास के लिए एक स्कीम की शुरूआत की गई है। अब तक, 38 परियोजनाओं की पहचान की गई है जिनमें से 23 को स्वीकृत किया गया है। विशाल परियोजनाएं विरासत और सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा पारिस्थितिक पर्यटन का विवेकपूर्ण मिश्रण हैं ताकि पर्यटकों को समग्र अनुभव दिलाया जा सके। आतिथ्य उद्योगों में दक्षता की भारी कमी को पूरा करने के लिए, सरकार ने बहुविध रणनीति स्थापित की है जिसमें प्रशिक्षण तथा शिक्षा के लिए संस्थागत अवसंरचना को सुदृढ़ करना और उसका विस्तार करना शामिल है। इसके अलावा, आतिथ्य क्षेत्र में युवाओं को दक्षता प्रशिक्षण देने के लिए तथा दक्षता प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। राष्ट्रमंडल खेलों के लिए विशेष प्रयास किए गए थे जिनमें अतिरिक्त होटल आवास का सृजन तथा पर्यटक टैक्सी चालकों, ऑटो चालकों तथा दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और आगरा में आव्रजन कार्मिकों जैसे सेवा प्रदाताओं को प्रशिक्षण सहायता प्रदान करना शामिल है ताकि उनको पर्यटक अनुकूल और आतिथ्य-सत्कार से परिपूर्ण किया जा सके। यद्यपि सामान्य सुरक्षा स्थिति में सुधार हुआ है, राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2002 के महत्वपूर्ण सुरक्षा स्तंभ को सुदृढ़ करने के लिए, सरकार ने 'सुरक्षित और गौरवपूर्ण पर्यटन' के लिए 1 जुलाई 2010 को आचार संहिता को अपनाया है।

10.31 अतुल्य भारत अभियान के अंतर्गत उन्नति-संबंधी प्रयासों को जारी रखने के साथ-साथ, सरकार ने प्रायोगिक आधार पर 1 जनवरी, 2010 से प्रभावी आगमन पर वीज़ा (वीओए) स्कीम पांच देशों नामत: सिंगापुर, फिनलैंड, न्यूजीलैंड, लग्ज़मबर्ग और जापान से आने वाले वाले पर्यटकों के लिए शुरू की है। जनवरी-दिसम्बर, 2010 के दौरान, इस स्कीम के अंतर्गत कुल 6549 वीओए जारी किए गए थे। वीओए स्कीम का विस्तार 1 जनवरी, 2011 से कम्बोडिया, वियतनाम, लाओस तथा फिलीपीन्स के नागरिकों के लिए तथा 25 जनवरी, 2011 से म्यांमार और इंडोनेशिया के नागरिकों के लिए किया गया है।

10.32 इन प्रयासों के बावजूद, इस सेक्टर की प्रभावकारिता को देखते हुए अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। सच तो यह है, 2008 में भारत के वाणिज्यिक सेवाओं के निर्यात में यात्रा का भाग जो 11.5 प्रतिशत है, कई अन्य सेवाओं के निर्यात से अपेक्षाकृत कम है और संयुक्त राज्य अमरीका, यूरोपीय संघ और चीन के भागों से आधा है (सारणी 10.8)।

सारणी 10.8 : भारत के वाणिज्यिक सेवा निर्यातों का संघटन तथा अन्य प्रमुख सेवा निर्यातक

(2008वें भाग)

	भारत	सं.रा. अमरीका	यू. यूनियन	जापान	चीन	सिंगापुर	हांगकांग
1. परिवहन	11.0	17.5	23.0	31.9	26.2	34.8	31.4
2. यात्रा	11.6	26.0	22.2	7.5	27.9	12.7	16.6
3. अन्य वाणिज्यिक सेवाएं	77.4	56.5	54.8	60.6	45.9	52.5	52.0

स्रोत: विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के आंकड़ों में से परिकल्पित

10.33 वर्ष 2009 में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन में भारत का भाग मामूली 0.58 प्रतिशत है। वस्तुत: 2009 में विदेश जाने वाले 11.07 मिलियन भारतीयों की संख्या विदेशी पर्यटकों से दोगुनी थी जबकि विदेश जाने वाले भारतीयों के कारण विदेशों में गई विदेशी मुद्रा विदेशी पर्यटकों से प्राप्त विदेशी मुद्रा से काफी कम है। यह तथ्य दर्शाते हैं कि आय और रोज़गार सृजन पर प्रवर्धन प्रभाव डालने वाला यह उच्च क्षमता का सेक्टर अभी भी अपेक्षाकृत अप्रयुक्त है।

परिवहन संबंधी कुछ सेवाएं

पोत परिवहन

10.34 पोत परिवहन देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, विशेषकर भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में। भारतीय पोत परिवहन उद्योग देश की ऊर्जा सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि ऊर्जा संसाधन जैसे कि कोयला, कच्चा तेल, तथा प्राकृतिक गैस का परिवहन मुख्य रूप से जलयानों से होता है। इसके अतिरिक्त, संकटकालीन परिस्थितियों में भारतीय पोत परिवहन परमावश्यक वस्तुओं की बराबर आपूर्ति में योगदान करता है और दूसरी रक्षा पंक्ति के तौर पर कार्य कर सकता है। अनुमानत: प्रमात्रा के लिहाज से 95 प्रतिशत तथा मूल्य के संदर्भ में 68 प्रतिशत देश के व्यापार का परिवहन समुद्री मार्ग से किया जा रहा है। हालांकि विकासशील देशों के बीच सबसे विशाल व्यापारी पोत परिवहन बेड़ों में से एक भारत के पास है, फिर भी सकल टनभार (डीडब्ल्यूटी) के लिहाज से 1 जनवरी, 2010 की स्थिति के अनुसार विश्व में भारत का नम्बर अट्ठारहवां है। 'फ्लैक्स ऑफ कन्वीनियन्स' देशों को छोड़कर, भारत का भाग बहुत कम 1.17 पतिशत है, जबकि चीन का भाग भारत के भाग से तकरीबन तीन गुणा ज्यादा है। (सारणी 10.9 देखें)। 2004-05 की शुरूआत तक भारतीय नौवहन टनभार (क्षमता) लगभग 7 मिलियन सकल टनभार (जीटी) पर व्यावहारिक दृष्टि से स्थिर है। तथापि, उस वर्ष भारत सरकार द्वारा शुरू की गई टनभार कर प्रणाली ने भारतीय बेडे तथा इसके टनभार में वृद्धि को बढ़ावा दिया। भारतीय नौवहन निगम, सार्वजनिक क्षेत्र का एक उपक्रम जिसके पास भारत के पोत परिवहन टनभार में 35.3 प्रतिशत का प्रमुख भाग है, का 10.16 मिलियन जीटी और 1040 जलयानों

सारणी 10.9 : 01 जनवरी 2010 की यथास्थिति के अनुसार फ्लैग्स ऑफ रजिस्ट्रेशन द्वारा व्यापारी बेड़ों का भाग

रैंक	फ्लैग ऑफ रजिस्ट्रेशन	डीडब्ल्यूटी भाग ('000 में)	(%)
1.	पनामा	2,88,758	22.63
2.	लाइबेरिया	1,42,121	11.14
3.	मार्शल आइलैंड्स	77,827	6.09
4.	हांग कांग		
5.	ग्रीस	67,629	5.30
6.	बहामास	64,109	5.02
7.	सिंगापुर	61,660	4.83
8.	माल्टा		
9.	चीन	45,157	3.54
10.	साइप्रस	31,305	2.45
11.	दक्षिण कोरिया	20,819	1.63
12.	नार्वे		
13.	यूके एवं उत्तरी आयरलैंड	20,176	1.58
14.	जापान	17,707	1.39
15.	जर्मनी	17,570	1.38
16.	इटली		
17.	आइल ऑफ मैन	16,711	1.30
18.	भारत	14,970	1.17
	विश्व जोड़	12,76,137	100

स्रोत : यूएनसीटीएडी, समुद्रीवर्ती परिवहन, 2010 की समीक्षा।

(01 जनवरी, 2011 की स्थिति के अनुसार) के साथ मौजूदा भारतीय बेड़ा है। इनमें से 9.1 मिलियन जीटी और 340 जलयान भारत के विदेशी व्यापार की जरूरतों को पूरा करते हैं और बाकी तटीय व्यापार की। 2007-08 के दौरान भारतीय जलयानों को सकल विदेशी मुद्रा आय/बचत रिकार्ड स्तर की 14,589 करोड़ रु. थीं। भारतीय नौवहन कंपनियों की निवल विदेशी मुद्रा आय/बचत वित्तीय लागतों का हिसाब देने के बाद 8952 करोड़ रु. की सकल आय/बचत का लगभग 61 प्रतिशत थीं।

10.35 भारतीय नौवहन उद्योग की वृद्धि को सुसाध्य तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए, सरकार ने कई उपायों की शुरूआत की है। जैसे कि सभी प्रकार के जलयानों के अधिग्रहण को खुले साधारण लाइसेंस के तहत लाना; पोत परिवहन और पत्तन

सेक्टरों में 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति प्रदान करना; पोत परिवहन मंत्रालय के चार्टरिंग पक्ष (ट्रांसचार्ट) के माध्यम से भारतीय पोत परिवहन जलयानों को केन्द्रीयकृत पोत परिवहन व्यवस्थाएं उपलब्ध कराते हुए कार्गो सहायता; 2004-05 के दौरान टनभार कर प्रणाली की शुरूआत; जून 2008 में भारतीय समुद्री-पर्यटन नीति तैयार करना; तथा नवम्बर, 2008 में भारतीय समुद्री विश्वविद्यालय की स्थापना।

10.36 भारतीय अनुप्रयुक्त अनुसंधान परिषद् (एनसीएईआर) के अनुसार, राष्ट्रीय नौवहन टनभार में 5 प्रतिशत की वृद्धि से भाड़ा बिल की अतिरिक्त 17 प्रतिशत की बचत होती है या फिर उतनी कमाई होती है और ऊर्जा एवं संसाधन संस्थान (टीईआरआई) की एक रिपोर्ट के अनुसार सकल पंजीकृत टनभार (जीआरटी) में 1 प्रतिशत के बदलाव से जीडीपी में लगभग 0.0068 प्रतिशत बदलाव आने की संभावना है। यद्यपि भारत का विदेशी समुद्री व्यापार पिछले कुछ वर्षों के दौरान 1999-2000 में 224.62 मिलियन टन से काफी बढ़कर 2004-05 से 2008-09 के दौरान 10.57 प्रतिशत की सीएजीआर के साथ 2008-09 में 598.70 मिलियन टन हो गया है, तथापि भारत के विदेशी व्यापार के परिवहन में भारत के निर्यात व्यापार में 5.7 प्रतिशत भाग और भारत के आयात व्यापार में 12 प्रतिशत भाग के साथ भारतीय जलयानों के भाग में 1980 के दशक के अंत में तकरीबन 40 प्रतिशत समुद्रपारीय व्यापार भारतीय जलयानों द्वारा किए जाने से 2008-09 में 9.5 प्रतिशत तक होने से तीव्र गिरावट हुई है। भारत के निर्यात व्यापार में भारतीय जलयानों की अपेक्षाकृत कम भागीदारी को देखते हुए तथा इस तथ्य को देखते हुएकि भारतीय बेड़े की औसत आयु 1999 में 15 वर्ष से बढ़ाकर 2009 में 18.3 वर्ष हो गई है, भारतीय जलयान पुराने हो रहे हैं, भारत जैसे आकार वाले देश के लिए यह अत्यावश्यक है कि जलयानों के बेड़े में वृद्धि की जाए। ऐसा करने से न सिर्फ अर्थव्यवस्था में अधिक बढ़ोत्तरी होगी अपितु अधिक विदेशी मुद्रा की आय/बचत बढ़ेगी तथा अधिक रोज़गार भी बढ़ेगा।

पत्तन सेवाएं

10.37 अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रवेशद्वार होने के नाते, पत्तन देश के समग्र आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत धन्य है कि उसके पास 13 महापत्तनों और लगभग 200 लघु पत्तनों सहित लम्बी तटीय सीमा है। लघु पत्तनों द्वारा यद्यपि मात्रा के लिहाज से 2008-09 तक कुल कार्गो का लगभग 72 प्रतिशत भारत के महपत्तनों और शेष लघु पत्तनों द्वारा संचालित होता था, निजी पत्तनों के विकास के साथ 2009-10 के दौरान महापत्तनों का हिस्सा गिर कर 67 प्रतिशत हो गया। आर्थिक मंदी का दौर तथा निर्यात में गिरावट के बावजूद 2008-09 और 2009-10 के दौरान, पिछले वर्ष की तुलना में महापत्तनों पर यातायात में क्रमश: 2.2 प्रतिशत तथा 5.74 प्रतिशत की वृद्धि हासिल हुई। पत्तन सेवा सेक्टर में कुछ हाल के कार्यों में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) आधार पर परियोजनाओं को प्रदान करने के लिए एक आदर्श रियायती करार को 2008 में अंतिम रूप दिया जाना तथा वेब-आधारित पत्तन समुदाय प्रणालियों की शुरूआत किया जाना शामिल है। 2008 में कार्गो की कुल मात्रा के संदर्भ में विश्व में पत्तनों की रैंकिंग की दृष्टि से सिंगापुर सर्वोच्च स्थान पर जिसके बाद शंघाई और रोटरडम की बारी आती है, मद्रास और जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास (जेएनपीटी) क्रमश: 70वें और 71वें स्थान पर आते हैं। कंटेनर यातायात के संदर्भ में भी सबसे ऊपर सिंगापुर और शंघाई हैं जबकि जेएनपीटी की रैंक 25वीं है।

10.38 भारतीय महापत्तनों पर वर्ष 2009-10 में औसत टर्नअराउंड समय 4.38 दिन था और यह कुछ पत्तनों जैसे कि पारादीप, कोलकाता, विज़ाग और कांडला पर अपेक्षाकृत और अधिक था, जबकि प्रति जलयान-बर्थ-दिवस का औसत निर्गत 10,168 टन था जो जेएनपीटी में औसत के दोगुने से अधिक था और कोलकाता पत्तन के औसत से लगभग 1/5 था। भारत में औसत टर्न अराउंड समय अंतर्राष्ट्रीय मानकों से अपेक्षाकृत पहले से ही अधिक है, सिंगापुर में जहां यह समय एक दिन से कम है, इससे और अधिक चिंता की बात वर्ष 2009-10 में औसत टर्न अराउंड समय तथा औसत बर्थिंग-पूर्व समय में वृद्धि तथा प्रति जलयान-बर्थ-दिवस के औसत निर्गत में गिरावट होना है (सारणी 10.10 देखें)।

10.39 पत्तन क्षेत्र पर काफी ध्यान देने की जरूरत है। नवीनतम प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हुए प्रणालियों के आधुनिकीकरण के जरिए पत्तनों पर मौजूदा अवसंरचना एवं सेवाओं में सुधार लाने के लिए समग्र दृष्टिकोण रखने की जरूरत है। विशेषकर अशोधित तेल की हैंडलिंग के लिए प्रमुख पत्तनों पर एकल-बिन्दु नौबंधों के संबंध में एक सुसाध्य नीति तैयार करके बुनियादी सुविधाओं को सुदृढ़ करने की जरूरत है। कार्गो हैंडलिंग, नौभरण, मार्गदर्शन प्रभार-सेवाएं, बंकर सेवाएं और माल-गोदाम संबंधी सुविधाओं के संबंध में मौजूदा पत्तनों पर उपलब्ध सुविधाओं को अपग्रेड करने की जरूरत है। सम्प्रति, देश के बाहर किए जा

सारणी 10.10 : भारत में प्रमुख पत्तनों के लिए कुछ निष्पादन संबंधी संकेतक

वर्ष	औसत परिवर्तन काल (दिवस में) औसत समय	लंगर डालने से पूर्व लगने वाला (घंटों में)	प्रति शिप बर्थ दिवसऔसत आउटपुट (मी. टन में)
2004-05	3.41	6.03	9298
2005-06	3.50	8.77	9267
2006-07	3.62	10.05	9745
2007-08	3.93	11.40	10071
2008-09	3.87	9.55	10473
2009-10[अ]	4.38	11.67	10168

स्रोत: पोत परिवहन मंत्रालय की वेबसाइट

रहे भारतीय कार्गो के पोतान्तरण को संयुक्त उपायों के जरिए भारतीय पत्तनों पर ही हैंडल करने की जरूरत है। इनमें भारतीय पत्तनों पर उपलब्ध ड्राबाब को बढ़ाना, पत्तन शुल्क को औचित्यपूर्ण बनाना और विभिन्न प्रकार के जलयानों अथवा विभिन्न नौभारों के लिए अलग-अगल प्रशुल्क लगाना शामिल होगा ताकि भारतीय पत्तनों पर लंगर डालने के लिए आधार पोतों को आकृष्ट किया जा सके। भारत में अनेकों पत्तन प्रभारों को कम करने की जरूरत है, क्योंकि पत्तनों की अकार्यक्षमता एवं पत्तन सेवाओं में श्रमिकों को पेंशन व अन्य अंशदानों जैसी असंबद्ध लागतों को शामिल करने के कारण कई अन्य देशों की तुलना में ये प्रभार उच्चतर हैं।

भंडारण सेवाएं

10.40 भंडारण सेवा क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भंडारण सेवाएं अन्तर्गामी और बहिर्गामी दोनों प्रचालन-तंत्रों में एक महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि कच्चा माल, पार्ट्स और स्टोरों का स्टॉक रखना पड़ता है, माल-सूची नियंत्रण को बनाए रखना पड़ता है तथा विनिर्देशों को पूरा न करने वाले माल को आपूर्तिकर्ताओं को लौटाना पड़ता है और साथ ही साथ बहिर्गामी प्रचालन तंत्र में उत्पादित माल की मांग/आदेश प्रवाह के अनुसार शिपिंग/प्रेषण से पूर्व विभिन्न भौगोलिक स्थानों पर संग्रहीत करना पड़ता है। भारत में भंडारण का सबसे अधिक महत्वपूर्ण घटक कृषि-उत्पादों, खाद्यान्नों, उर्वरकों, खाद आदि के लिए कृषिक भंडारण है। अन्य घटकों में औद्योगिक सामान, आयात कार्गो और उत्पाद-शुल्क संबंधी कार्गो; आयात/निर्यात को सरल एवं सुसाध्य बनाने के लिए अन्तर्देशीय कान्टेनर डिपो (आईसीडी)/कान्टेनर भाड़ा स्टेशन (सीएफएस) तथा ठंडे और तापमान नियन्त्रित स्टोरेज के लिए विशेष मालगोदाम शामिल हैं। भंडारण क्षेत्र हैंडलिंग, परिवहन, कीट नियंत्रण, कृषक विस्तार स्कीमें, दहलीज पर ही उपलब्ध भंडारण सुविधाएं, परामर्शदात्री सेवाएं तथा परियोजना निष्पादन जैसी सहायक सेवाएं भी मुहैया कराता है।

10.41 सरकार ने कृषि संबंधी उपकरणों एवं उत्पाद तथा अन्य अधिसूचित जिन्सों के लिए वैज्ञानिक भंडारण सुविधाएं मुहैया कराने के उद्देश्य से केन्दीय भंडारण निगम (सीडब्ल्यूसी) की स्थापना की। इसके अतिरिक्त, इसी उद्देश्य से 17 राज्य भंडारण निगमों की स्थापना भंडारण निगम अधिनियम, 1962 के अधीन की गई थी। केन्द्रीय भण्डारण निगम और संबंधित राज्य सरकारें इन राज्य भंडारण निगमों की बराबर की शेयर धारक हैं। सामाजिक उद्देश्यों के साथ वाणिज्यिक पहुंच के फलस्वरूप, सीडब्ल्यूसी सम्पूर्ण देश में एक बहुत बड़े भंडारण नेटवर्क का संचालन कर रहा है। 31 दिसम्बर, 2010 की स्थिति के अनुसारकेन्द्रीय भंडारण निगम कुल 102.24 लाख मी. टन भंडारण क्षमता और 85 प्रतिशत औसत उपयोग वाले 476 वेअरहाउस चला रहा है। 1970 के दशक के अंतिम वर्षों में पब्लिक बांडिड वेअरहाउसों को चलाना तब शुरू किया जब केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा-शुल्क बोर्ड ने भंडारण और वेअरहाउसिंग के क्षेत्र में सीडब्ल्यूसी की विशेषज्ञता को स्वीकार करते हुए इसे शुल्क-योग्य माल के कस्टोडियन के रूप में अभिज्ञात किया। सीडब्ल्यूसी ने भी अपने व्यवसाय को सीएफएस/आईसीडी में बदल दिया और इसने लोनी (उ.प्र.) से जवाहर लाल नेहरू पोर्ट तक कान्टेनर रेल परिवहन भी शुरू किया। सीडब्ल्यूसी की समग्र क्षमता का विस्तार धीमा रहा, क्योंकि यह बहुत लागत प्रभावी था। उत्पन्न लाभ को और वेअरहाउसों का निर्माण करने के लिए लगा दिया ताकि सम्पूर्ण देश में वेअरहाउसिंग की अवसंरचना सुदृढ़ हो सके। राज्य स्तर पर, 17 राज्य भंडारण निगम भंडारण संबंधी जरूरतों को पूरा करते हैं तथा सीडब्ल्यूसी के कार्यों के पूरक हैं। 31 अक्तूबर, 2010 की स्थिति के अनुसार, ये राज्य भंडारण निगम 214.41 लाख मी. टन औसत भंडारण क्षमता वाले 1585 वेअरहाउसों के नेटवर्क को संचालित कर रहा था।

10.42 सरकार द्वारा हाल ही में की गई प्रमुख नीतिगत पहलों में भारत सरकार की सात-वर्षीय गारन्टी स्कीम के तहत गोदामों का निर्माण, इनमें से अधिकांश गोदामों की व्यवस्था सीडब्ल्यूसी अथवा एस.डब्ल्यू.सीज द्वारा की जा रही है; मालगोदाम संबंधी संरचना के निर्माण में 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति; और नाबार्ड की ग्रामीण भंडारण योजना तथा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत मालगोदामों का निर्माण शामिल हैं। वर्ष 2007-08 में, सरकार ने वेअरहाउसिंग (विकास एवं विनियमन) अधिनियम 2007 बनाया ताकि वेअरहाउस प्राप्ति को पूरी तरह से परक्राम्य बनाया जा सके। हाल ही में, सरकार ने अपनी गैर-सरकारी उद्यम गोदाम (पी.ई.जी.) स्कीम के तहत गोदामों के निर्माण के लिए एक अन्य प्रमुख पहल की। सीडब्ल्यूसी ने वर्ष 2009-10 के दौरान 0.9 लाख मी. टन क्षमता वाले गोदामों का निर्माण किया तथा वर्ष 2010-11 के दौरान 1.77 लाख मी. टन अतिरिक्त क्षमता वाले गोदामों का निर्माण करने की योजना है।

10.43 वेअरहाउसिंग सेक्टर से संबंधित कुछ मुद्दों में उच्च कोटि की भंडारण क्षमता तथा प्रशिक्षित नमूना-संग्रहकों/ ग्रेड निर्धारिकों की संख्या बढ़ाना; भंडारण के दौरान उत्पादों के खराब होने, ऐसे मामलों, जिनमें स्टॉक बैंकों के पास गिरवी रखे हैं और जमा करने वाला या तो भगोड़ा हो गया है अथवा उसने डिलीवरी लेने से मना कर दिया है, के साथ डिलिंग करने का प्रावधान न होने की वजह से भंडारण में हानि जैसे मुद्दों का समाधान करना, शहरों में प्रवेश-निषेध क्षेत्रों के विस्तार के कारण स्टॉकों की डिलीवरी और जमा करने में विलम्ब, मालगोदामों पर सम्पत्ति कर लगाना तथा पत्तनों द्वारा उच्च शुल्क वसूल करना शामिल है।

दूरसंचार और संबंधित सेवाएं

10.44 भारत में दूरसंचार क्षेत्र की शुरूआत होने से न केवल तेजी से विकास होना शुरू हुआ है, बल्कि उपभोक्ता को अधिक

से अधिक लाभ पहुंचाने में भी अत्यधिक मदद मिली है, जैसाकि 2004-05 में दूरसंचार सेवा मूल्य सूचकांक 100 से गिरकर 2007-08 में 85.08 रह जाने के साथ ही बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप प्रत्येक के प्रशुल्क (टैरिफ) कम होते जा रहे हैं। दूरसंचार क्षेत्रमें टेलीफोन ग्राहकों की संख्या 1999 में 22.8 मिलियन थी जो बढ़कर 2003 में 54.6 मिलियन और फिर नवम्बर, 2010 के अंत तक 764.77 मिलियन हो गई है। इस विकास में वायरलैस टेलीफोन कनेक्शनों का योगदान है, जैसाकि मार्च 2001 में वायलैस कनेक्शनों की संख्या 3.57 मिलियन थी, जो बढ़कर नवम्बर, 2010 के अंत तक 729. 58 मिलियन हो गई। टेली-घनत्व, जो 2.32 प्रतिशत था, बढ़कर नवम्बर, 2010 में 64.34 प्रतिशत हो गया। तथापि, ग्रामीण टेली-घनत्व (नवम्बर, 2010 में 30.18 प्रतिशत) और शहरी टेली-घनत्व (नवम्बर, 2010 में 143.95 प्रतिशत) के बीच काफी बड़ा अन्तर है। इससे पता चलता है कि बाजार में अब भी अत्यधिक अप्रयुक्त क्षमता है।

10.45 इन्टरनेट, जो संचार की एक अन्य उभरती हुई प्रणाली है, कम्प्यूटर नेटवर्क का एक विश्वव्यापी सिस्टम है। ब्रॉडबैंड को प्राय: ''हाई-स्पीड'' इंटरनेट कहा जाता है, क्योंकि इसकी डाटा-ट्रांसमिशन दर आमतौर पर ऊंची होती है। 2005 में ब्रॉडबैंड ग्राहकों की संख्या 0.18 मिलियन थी, जो नवम्बर, 2010 के अन्त में बढ़कर 10.71 मिलियन हो गई। आशा है 2010 तक इन्टरनेट और ब्रॉडबैंड ग्राहकों की संख्या बढ़कर क्रमश: 20 मिलियन और 40 मिलियन हो जाएगी। बीडब्ल्यूए (ब्रॉडबैंड वायरलैस एक्सिस) सेवाओं की शुरूआत होने से ब्रॉडबैंड ग्राहकों की पैठ के साथ-साथ संख्या बढ़ जाएगी। वाई-मैक्स भी सम्पूर्ण क्षेत्रों में वायरलैस ब्रॉडबैंड संयोजकता की पैठ बढ़ा रहा है। (और अधिक विवरण के लिए कृपया अध्याय 11 देखें)

भू-सम्पदा सेवाएं

10.46 भू-सम्पदा क्षेत्र में सरकारी एजेन्सियों और प्राइवेट डिवलेपर्स दोनों की भागीदारी और सहभागिता के साथ वाणिज्यिक एवं आवासीय भू-सम्पदाओं का विकास शामिल है। व्यापारिक सेवाओं के साथ भू-सम्पदा क्षेत्र (आवासों के स्वामित्व सहित) से जीडीपी में वर्ष 2009-10 में 7.5 प्रतिशत (स्थिर मूल्यों पर)वृद्धि हुई। शेयर के संबंध में वर्ष 2009-10 में यह जीडीपी का 9.3 प्रतिशत बैठता है। उदार निवेश एवं ऋण संबंधी नीतियों के साथ लगातार बजटों में आवासीय क्षेत्र के लिए दिए गए राजकोषीय प्रोत्साहनों तथा सुधारों के फलस्वरूप आवास एवं भू-सम्पदा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के केन्द्र बन गए हैं। नीतिगत उपायों में विशेष आर्थिक क्षेत्रों सहित, ऑटोमैटिक रूट, जिसने विदेशी निवेशकों को आकृष्ट किया है, के तहत टाउनशिप, आवास, निर्मित बुनियादी अवसंरचना और निर्माण विकास परियोजनाओं में एफडीआई के लिए अनुमति शामिल हैं। तथापि, भू-सम्पदा व्यापार में एफडीआई की अनुमति नहीं है। स्थानीय और क्षेत्रीय दोनों स्तरों पर हाउसिंग वित्त संस्थाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्थापित किए गए नेशनल हाउसिंग बैंक (एनएचबी) ने केवल अपना निजी मकान वाले वरिष्ठ नागरिकों को कवर करने के लिए रिवर्स बन्धक ऋण उत्पाद की परिकल्पना की है। इससे आवासीय भू-सम्पदा मूल्य सूचकांक (रेसीडेक्स), जो हाउसिंग वित्त क्षेत्र को सम्पूर्ण देश में आवासीय परिसम्पत्तियों के मूल्यों में प्रवृत्ति को दर्शाने वाला सूचकांक मुहैया कराने की दिशा में एक पहल है।

10.47 वैश्विक आर्थिक संकट ने भारतीय भू-सम्पदा उद्योग पर उल्लेखनीय प्रभाव डाला। तथापि, आवासीय परिसम्पत्तियों की मांग बढ़ाने तथा भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों और हाउसिंग वित्त कम्पनियों (एचएफसीज) के लिए एनएचबी संबंधी प्रावधानों की आवश्यकताओं में छूट देने के लिए सरकार द्वारा किए गए विभिन्न उपायों के फलस्वरूप इस क्षेत्र पर आर्थिक संकट का प्रभाव बहुत कम पड़ा है। भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ती हुई गतिविधियों के बाद इस क्षेत्र ने बुनियादी अन्तर के साथ संभलना शुरू कर दिया है। ग्राहक उत्साह और प्रचार के आधार पर निवेश करने जैसाकि 2007 और 2008 में देखने में आया, के बजाय अब आवश्यकता के आधार पर खरीदारी कर रहे हैं।

10.48 प्राइस वाटरहाउस कूपर्स (पीडब्ल्यूसी) और भारतीय शहरी भूमि संस्थान (यूएलआई) द्वारा किए गए एक संयुक्त अध्ययन में कहा गया है कि एशिया प्रशांत क्षेत्र में भू-सम्पदा क्षेत्र के लिए एक उभरता हुआ बाजार है। इस अध्ययन में भारत को एशिया प्रशांत क्षेत्र में अर्ध-पारदर्शी बाजार के रूप में वर्गीकृत किया गया है और वैश्विक पारदर्शिता के स्कोरिंग स्केल पर इसे41वां रैंक दिया गया है। वर्ष2011 के लिए भू-सम्पदा में निवेश हेतु मुंबई को (तीसरे), नई दिल्ली को (पांचवें) और बंगलौर को (10वें) रेंक के साथ शीर्ष 10 भावी शहरों में स्थान दिया गया है। वर्ष 2011 के लिए शहर के विकास की संभावनाओं की दृष्टि से मुंबई और नई दिल्ली शीर्ष दो स्थानों पर काबिज हैं।

10.49 इस उभरते हुए सेवा क्षेत्र में, हालांकि ब्याज दरों को सुदृढ़ करने जैसी अल्पकालिक चिन्ताओं का निराकरण करने की जरूरत है, फिर भी उच्च स्टाम्प ड्यूटी की समस्या जिसके कारण ईमानदार नागरिक को भी काले धन में सौदा करना पड़ता है, तथा ऋण को समय-पूर्व चुकाने से संबंधित समस्याओं से निपटने जैसी कुछ बुनियादी सुधारों तथा शहरी भूमि सीमा विनियमन अधिनियम (यूएलसीआरए) की भी जरूरत है।

कुछ व्यापार सेवाएं

आईटी और आईटीईएस

10.50 भारत ने सूचना प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सेवा क्षेत्र के कारण ज्ञान अर्थव्यवस्था की दृष्टि से एक ब्रांड के रूप में पहचान हासिल कर ली है। आईटी-आईटीईएस उद्योग के चार प्रमुख घटक हैं: आईटी सेवाएं, बिजनिस प्रोसिस आउटसोर्सिंग

(बीपीओ), इंजीनियरिंग सेवाएं और आर एंड डी तथा साफ्टवेअर उत्पाद। भारत में सेवा क्षेत्र में विकास का मार्ग आईटी-आईटीईएस क्षेत्र द्वारा प्रशस्त हुआ है जो अर्थव्यवस्था के विकास का प्रमुख साधन बन गया है और यह सकल घरेलू उत्पाद रोजगार और निर्यात को बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। 2004-05 में इस क्षेत्र का भारत के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान 4.1 प्रतिशत था जो बढ़कर 2009-10 में 6.1 प्रतिशत हो गया तथा आशा है 2010-11 में यह 6.4 प्रतिशत हो जाएगा। इस उद्योग ने भी तृतीय स्तर की शिक्षा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण मदद की है। इस क्षेत्र के निर्यात में करीब 90 प्रतिशत हिस्सा शीर्ष सात राज्यों का है जिन्होंने अन्य राज्यों की तुलना में छह से सात गुणा अधिक कालेज शुरू किए हैं।

10.51 भारतीय आईटी-आईटीएस उद्योग ने 2004-05 से भारी वृद्धि दर्ज की है। एनएएसएससीओएम के अनुसार वर्ष 2010-11 को सम्पूर्ण परपक्व और उभरते कार्यक्षेत्र में वैविध्यपूर्ण वृद्धि द्वारा चित्रित किया गया है। भारतीय आईटी-आईटीईएस का सकल राजस्व 2009-10 में 63.7 बिलियन अमरीकी डालर था, जिसके 2010-11 में बढ़कर 76.1 बिलियन अमरीकी डालर होने का अनुमान है जो 2004-05 से 2010-11 तक 22.5 प्रतिशत सीएजीआर में परिवर्तित हो जाएगा। इस उद्योग ने 2009-10 में 6.2 प्रतिशत सामान्य वृद्धि की तुलना में 2010-11 में 19.5 प्रतिशत की अनुमानित वृद्धि हुई (देखें सारणी 10.11)। निर्यात आइटी-आईटीईएस उद्योग पर अपना वर्चस्व रखते हैं। और सम्पूर्ण उद्योग का राजस्व करीब 77 प्रतिशत बैठता है। आई.टी.-आई.टी.ई.एस. का सम्पूर्ण निर्यात 2004-05 में 17.7 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2009-10 में 49.7 बिलियन अमरीकी डालर हो गया तथा अनुमान है कि 2004-05 से 2010-11 तक 22.2 प्रतिशत सी.ए.जी.आर. दर्ज करते हुए यह 2010-11 में बढ़कर 58.9 बिलियन अमरीकी डालर का हो जाएगा।

10.52 यद्यपि आई.टी.-आई.टी.ई.एस. क्षेत्र निर्यातोन्मुखी क्षेत्र है, फिर भी घरेलू बाजार भी 2009-10 में 14 बिलियन अमरीकी डालर की राजस्व वृद्धि तथा 2010-11 में 17.2 बिलियन अमरीकी डालर के अनुमानित राजस्व के साथ महत्वपूर्ण है। आई.टी. और बी.पी.ओ. उद्योग (हार्डवेअर को छोड़कर) के विकास में त्वरित प्रतिघात देखा गया है तथा इसके 19.5 प्रतिशत तक बढ़ जाने का अनुमान है तथा इसके 58.9 बिलियन अमरीकी डालर के निर्यात के साथ 2010-11 में कुल 76.1 बिलियन अमरीकी डालर के राजस्व का एक बड़ा भाग बैठता है।

10.53 यह क्षेत्र भी रोजगार-परक हो गया है। आई.टी. सेवाओं तथा बीपीओ/आई.टी.ई.एस. खंड में 2009-10 में 2.3 मिलियन प्रत्यक्ष रोजगार था और वित्तीय वर्ष 2010-11 के अन्त तक यह लगभग 2.5 मिलियन तक पहुंच जाएगा। 2010-11 में इस सेक्टर के विकास के कारण 8.3 मिलियन से अधिक अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित किए गए हैं। ये नौकरियां वाणिज्यिक एवं आवासीय भू-सम्पदा, फुटकर, आतिथ्य, परिवहन और सुरक्षा जैसे विविध क्षेत्रों में जनरेट की गई हैं।

10.54 भारत वैश्विक आउटसोर्सिंग सेक्टर में लगातार अग्रणी बना हुआ है। तथापि, इसका भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि यह सतत् प्रतिस्पर्धात्मकता से संबंधित चुनौतियों का किस प्रकार सामना करेगा। इनमें बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा, बढ़ती हुई लागतें, प्रतिभा में गिरावट; अवसंरचना में ठहराव, जोखिम बोध का बढ़ना, प्रमुख बाजारों में संरक्षणवाद और खराब होता हुआ व्यापारिक माहौल शामिल है।

10.55 सरकार आई.टी.और आई.टी. ई.एस. सेक्टर की कई प्रकार से मदद कर रही है। 2010-11 के बजट में आई.टी. अवसंरचना और डिलीवरी मैकेनिज्म में सुधार लाने के लिए सरकारी खर्च तथा आई.टी. कम्पनियों और सरकारी ई-गवर्नेन्सयोजना के लिए सरचार्ज को 10 प्रतिशत से कम करके 7.5 प्रतिशत करने के लिए सरकारी खर्च जैसी नीतियों के साथ हुई शुरूआत से यह सहायता जारी है। आई.टी-आई.टी.ई.एस. सेक्टर में कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिन पर ध्यान देने की जरूरत है। इनमें बी.पी.ओ. में अन्य देशों के साथ प्रतिस्पर्धा तथा स्थानीय लोगों को रोजगार देने के लिए यू.के. जैसे कुछ विकसित देशों में मौजूद नीतियों के आलोक में कार्यक्रम तैयार करने जैसी लो-एण्ड-सर्विसीज से हाई-एंड-सर्विसीज की ओर शिफ्ट होना; आंकड़ों के संरक्षण संबंधी मुद्दों का निराकरण करना क्योंकि आधा ऑफशोर कार्य भारत में नहीं आता है; सामाजिक सुरक्षा हित संबंधी मुद्दों को हल करने के लिए लक्षित देशों के साथ करारों को समग्रता के साथ पूर्ण करना जैसाकि आजकल किया जा रहा है; तथा घरेलू क्षेत्र में आई.टी. और आई.टी.ई.एस. सेवाओं की कवरेज और गहनता शामिल है।

सारणी 10.11 : आई.टी.-आई.टी.ई.एस. का राजस्व और निर्यात (बिलियन अमरीकी डालर)

वर्ष	2009-10	2010-11 (अनुमानित)	2010-11 में वृद्धि दर (%)	सी.ए.जी.आर.(2005-06 से 2010-11) (%)
आई.टी.-बीपीओ का सकल सेवा राजस्व	63.7	76.1	19.5	22.5
निर्यात	49.7	58.9	18.5	22.2
जिसमें से घरेलू	14.0	17.2	22.8	23.7
(i) आई.टी-सेवाएं	8.9	10.9	22.5	20.8
(ii) आई.टी.ई.एस.-बी.पी.ओ.	2.2	2.8	27.3	29.3
(iii) सॉफ्टवेअर उत्पाद	2.9	3.5	20.7	30.7

स्रोतः एन.ए.एस.एस.सी.ओ.एम.

लेखांकन और लेखापरीक्षा संबंधी सेवाएं

10.56 लेखांकन, लेखापरीक्षा, और बुक-कीपिंग सेवाएं ''बिजनेस सेवाओं'' का हिस्सा हैं। भारत में लेखांकन का व्यवसाय अत्यधिक विकसित है और इसमें अन्तर्राष्ट्रीय तौर पर और अधिक प्रतिस्पर्धी बनने की क्षमता है। डब्ल्यू.टी.ओ. आंकड़ों के अनुसार, 2008 में भारत ने 33.76 बिलियन डालर की अन्य व्यापारिक सेवाएं निर्यात कीं। इनमें कानूनी, लेखांकन, प्रबंधन और जन-सम्पर्क सेवाओं का हिस्सा 17.4 प्रतिशत था तथा भारत ने 21.06 बिलियन डालर की अन्य व्यापारिक सेवाएं आयात कीं, जिनका शेयर 17.9 प्रतिशत था। भारतीय लेखांकन फर्में और अधिक एकीकृत होती जा रही हैं तथा लेखांकन, लेखापरीक्षा और कर-सेवाओं जैसे मूल कार्य के अतिरिक्त प्रबंधन संबंधी परामर्शदायी सेवाएं, निगमित वित्त और परामर्शी सेवाएं जैसी संबद्ध सेवाएं मुहैया करा रही हैं। लेखांकन व्यवसाय की संरचना भारत में कुछ साझेदारों अथवा स्वामित्व वाली संस्थाओं के साथ साझेदारी के रूप में है। भारतीय लेखांकन सेक्टर में मुख्यत: छोटे और मध्यम उद्यम (एसएमई) हैं जो भारत की मौजूदा आर्थिक संरचना के अनुकूल है। पांच अथवा पांच से अधिक साझेदारों वाली चार्टरित एकाउन्टेंसी फर्मों की संख्या 13000 फर्मों से अधिक फर्मों में से करीब 2000 है। शेष फर्में मालिकाना फर्मों अथवा अपने-अपने नाम से कार्य कर रही हैं। भारत में चार्टरित एकाउन्टेंसी-व्यवसाय ने अपनी अर्हता, प्रशिक्षण और मानकों (आई.एफ.आर.एस. संबंधी वैश्विक मानकों के कनवर्जेन्स सहित) का वैश्विक स्तर पर बैंचमार्क निर्धारित किया है तथा यू. के., आस्ट्रेलिया, कनाडा और आयरलैंड में लेखांकन निकायों के साथ योग्यता, मान्यता संबंधी व्यवस्थाओं पर समझौता किया है।

10.57 भारत में लागत और प्रबन्धन लेखांकन व्यवसाय ने व्यावसायिक लागत की क्वालिटी और प्रबंधन लेखांकन सेवाओं, जो दुनिया की सबसे अच्छी सेवाओं के समान हैं, के संबंध में अत्यन्त परिपक्वता हासिल कर ली है। तथापि, भारत में लागत लेखापरीक्षा और लागत प्रबंधन तकनीकों का सीमित प्रयोग होता है। प्रबंधन लेखांकन साधनों के व्यापक पैमाने पर वैज्ञानिक इस्तेमाल से कार्यों में उच्च लागत दक्षता लाकर भारतीय लेखांकन उद्योग को और अधिक ऊंचाई पर ले जाया जा सकता है।

10.58 बीमाकिंक और लेखा सेवाओं जैसे निच क्षेत्रों में आउटसोर्सिंग को काम में लाने की जरूरत है, क्योंकि भारत के लिए बैंक कार्यालयों की स्थापना करने के साथ-साथ बीमांकिक सेवाओं और लेखा सेवाओं की आउटसोर्सिंग के काफी आसार हैं। लेकिन भारतीय सेवा प्रदाताओं को बीमा, पेंशन आदि से संबंधित कानूनों के अतिरिक्त अमरीका और अन्य देशों के कर संबंधी कानूनों के बारे में उच्च क्वालिटी का प्रशिक्षण देने की जरूरत है। छोटे आकार की घरेलू लेखा फर्मों की कमजोरियों पर काबू पाने के लिए टाई-अप्स से भारत के लेखांकन सेक्टर को कई गुना बढ़ाने में भी मदद मिल सकती है।

आर एंड डी

10.59 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने अनुमान के मुताबिक वर्ष 2007-08 में शोध एवं अनुसंधान गतिविधियों पर राष्ट्रीय निवेश 37,777.9 करोड़ रुपए था। यद्यपि वर्ष 2007-08 में जीडीपी के प्रतिशत के रूप में आर एंड डी की हिस्सेदारी 0.8 प्रतिशत रही थी जोकि अन्य विकासशील देशों तथा मैक्सिको, मलेशिया, तथा चिली से काफी आगे थी तथा साउथ कोरिया (3.5 प्रतिशत), रूस (1.1 प्रतिशत), चीन (1.5 प्रतिशत) और ब्राजील (1 प्रतिशत) से काफी पीछे है।

10.60 शोध एवं अनुसंधान गतिविधियों पर क्षेत्रवार व्यय की विभिन्न देशों की तुलना अन्य देशों में कारोबार उद्यम क्षेत्र की प्रमुखता को दर्शाता है। संयुक्त राज्य अमरीका और चीन में वर्ष 2007 में कुल शोध व अनुसंधान व्यय 72 प्रतिशत दर्ज किया गया जबकि यू.के. में यह 64 प्रतिशत था। जबकि भारत में, सरकारी क्षेत्र की मुख्य हिस्सेदारी को बनाए रखते हुए एक महत्वपूर्ण विकास हुआ जिसके तहत् वर्ष 2002 में 19 प्रतिशत से

सारणी 10.12 : क्षेत्रों द्वारा अनुसंधान एवं विकास व्यय : विभिन्न देशों से तुलना

(प्रतिशत)

देश	2002				2007			
	कारोबार उद्यम	सरकारी	उच्चतर शिक्षा	निजी गैर-लाभ	कारोबार उद्यम	सरकारी	उच्चतर शिक्षा	निजी गैर-लाभ
सं.रा. अमरीका	70.0	12.1	13.4	4.5	72.6	10.6	12.9	3.9
यू.के.	64.8	9.2	24.0	1.9	64.2	8.3	25.2	2.3
चीन	61.2	28.7	10.1	-	72.3	19.2	8.5	नगण्य
दक्षिण कोरिया	74.9	13.4	10.4	1.3	58.6	18.6	21.3	1.5
रूस	69.9	24.5	5.4	0.2	62.9	30.1	6.7	0.3
ब्राजील	40.4	20.6	38.9	0.1	40.2	21.3	38.4	0.1
भारत	**19.3**	**76.5**	**4.1**	**-**	**29.6**	**66.0**	**4.4**	**नगण्य**
दक्षिण अफ्रीका	55.5	21.9	20.5	2.1	57.7	21.7	19.4	1.2

स्रोत : यूनेस्को विज्ञान रिपोर्ट 2010

कारोबारी उद्यमों की हिस्सेदारी बढ़कर वर्ष 2007 तक 30 प्रतिशत हो गई। (सारणी 10.12)

10.61 वर्ष 2009-10 के अनुमानों के अनुसार, क्षेत्र जिसमें सबसे अधिक शोध व अनुसंधान व्यय किया गया है उसमें फार्मास्यूटिकल्स, विद्युत और गैर-विद्युत मशीनरी, परिवहन उपकरण, इलेक्ट्रोनिक्स और प्लास्टिक शामिल है। फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र के लिए शोध व अनुसंधान गहनता बिक्री के प्रतिशत के रूप शोध व अनुसंधान में) अन्य क्षेत्र से अधिक उच्चतर थी।

10.62 शोध व अनुसंधान सेवाओं, खासकर स्वास्थ्य संबंधी देखभाल, बायो तकनीकी और इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए संभावनाएं बढ़ी हैं। तथापि इस क्षेत्र में बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) से संबंधित मुद्दे हैं। भारत ने गत दो वर्षों में बौद्धिक सम्पदा अधिकार कानूनों में संशोधन किया है और पूर्णतः डब्ल्यूटीओ नियमों के अनुरूप इसके कानून हैं। भारत में निष्पक्ष न्यायिक प्रक्रिया है जो कानूनों को क्रियान्वित करती है। सरकार ने वर्ष 2010-11 के बाजार में अनुमोदित शोध संगठनों से ली गई आय में छूट के अलावा विनिर्माण कारोबार के लिए 150 प्रतिशत से बढ़ाकर 200 प्रतिशत की इन-हाउस आरएण्डडी पर की गई व्यय पर भारित कटौती की बढ़ोत्तरी और राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, शोध संगठनों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और अन्य वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थानों की भुगतानों के लिए 125 प्रतिशत से 175 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी और सामाजिक विज्ञान अथवा सांख्यिकी अनुसंधाान में लगे अनुमोदित संगठनों के लिए 125 प्रतिशत भारित कटौती का अनुमति देने जैसी कई उपाय किए गए हैं। इन नव-पहलों से सुसज्जित निजी क्षेत्र को अन्य देशों से सीख लेनी चाहिए और इसके शोध व अनुसंधान निवेशों को आगे बढ़ाना चाहिए।

विधिक सेवाएं

10.63 भारत, सं.रा. अमरीका, और यू.के. में विधिक प्रणाली ब्रिटिश कॉमन लॉ से विकसित हैं, अतः अतिरिक्त प्रशिक्षण दिए बगैर संविदाओं की वेंटिंग करने, पेटेंट दर्ज कराने अथवा दस्तावेजों की पुनरीक्षा करने जैसे मानक विधिक कार्य में भारतीय विधिवक्ताओं को सक्षम बनाती हैं। भारत में 600,000 विधिक प्रैक्टिसनर्स अनुमानित हैं और संख्या की दृष्टि से सं.रा. अमरीका के बाद दूसरे स्थान पर है। इन उद्योग स्रोतों के अनुसार, भारतीय व्यवसायिक कानूनी व्यवसाय में राजस्व 600 करोड़ से 650 करोड़ प्रति वर्ष के लगभग है। वैयक्तिक अधिवक्ता और छोटे अथवा परिवार आधारित उद्योग सेवा प्रदाता हैं भारत में, वकालत की सेवा अधिवक्ता अधिनियम 1961 द्वारा शासित की जाती है। इस अधिनियम के तहत, भारत में कानून की प्रैक्टिस को व्यवसाय में संलग्न की अनुमति विदेशी कानून फर्मों को नहीं देती है। कई विदेशी विधिक फर्मों ने सम्पर्क कार्यालय स्थापित किये हैं (वर्तमान में कानून के तहत अनुमति दी गई है), जबकि कुछ फर्मों ने भारतीय फर्मों के साथ रेफरल संबंधों को स्थापित किया है।

10.64 भारत ने 750 से अधिक कानून महाविद्यालयों और प्रतिवर्ष ग्रेजुएट होकर निकलने वाले लगभग 30,000 विधिवक्ता हैं। भारतीय बार काउंसिल, जो पेशेगत व्यवहार और शिष्टाचार के मानकों को लागू करता है, विधिक शिक्षा हेतु मानकों के रूप में भी, अधिवक्ता अधिनियम 1961 के तहत गठित कर ली गई है। इसके अतिरिक्त, राज्य कर काउंसिल भी है जो अधिवक्ताओं का नामांकन करता है और मानदंडों को लागू करता है। सरकार ने विविध प्राधिकरण सेवा अधिनियम 1987 के तहत विधिक सहायता कार्यक्रमों की क्रियान्वयन को मॉनीटर और मूल्यांकन करने के लिए एक राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण गठित किया है और इस अधिनियम के तहत विधिक सेवाओं को उपलब्ध कराने के लिए नीतियों और सिद्धातों को लागू करता है। राष्ट्रीय विधिक मिशन द्वारा नियत लक्ष्य के मुताबिक न्यायालयों में सरकारी मुकदमेबाजी घटाने की दृष्टि से राष्ट्रीय लिटीगेशन नीति भी आरम्भ की गई है ताकि न्यायालयों का समय अन्य बकाया मामलों को निपटाने में लगाया जा सके, तथा औसत बकाया समय जो कि अभी 15 वर्ष है, को घटाकर तीन वर्ष किया जा सके।

10.65 वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक रिपोर्ट (2010-11) के अनुसार, न्यायिक स्वतंत्रता के संदर्भ में, 4.8 स्कोर के साथ भारत का 41वां स्थान है। विवाद के निपटाने में विधिक फ्रेमवर्क के क्षमता के संबंध में, एफडीआई प्रतिबंधों के उदारीकरण, भारतीय बाजारों में कई एक भागीदारों की प्रविष्टि, सबसे प्रमुख क्षेत्रों में उच्च वृद्धि और भारत के उभरते अर्थव्यवस्था और कम-कीमत सोर्सिंग पहुंच के फलस्वरूप निवेश क्रियाकलापों में 4.1 के स्कोर की बढ़ोतरी हुई जिसमें भारत का 47वां स्थान है।

10.66 भारतीय अर्थव्यवस्था के बढ़ते वैश्वीकरण के चलते भाारत की न्याय प्रणाली में वर्ष दर वर्ष परिवर्तन हुए हैं। इससे भारतीय वकील वैश्विक सेवा प्रदाताओं कोअपनी सेवा देने में समर्थ हुए है। अंतर-सीमा विलयन, कारपोरेट पुनर्संरचना, अधिग्रहण, आईपीआर ऐसे कुछ क्षेत्र हैं जिसमें भारतीय वकीलों ने विशेषता हासिल की है। उदारीकरण से भारतीय वकील बैंकिंग, टेलीकॉम, बीमा, विद्युत,नागरी विमानन तथा परिवहन जैसे क्षेत्रों के मामले देखने में उम्दा अनुभव प्राप्त करते रहे हैं। ये मामले पहले मुख्यतः सरकारी क्षेत्र के अधिकार क्षेत्र में आते थे। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कराधान, विलयन तथा अधिग्रहण, संयुक्त उद्यमों, आईपीआर, एफडीआई और विशेष आर्थिक क्षेत्रों से जुड़े क्षेत्रों में अनुभव अर्जित किया है। व्यापार से संबंधित बौद्धिक संपदा अधिकार (टीआरआईपीएस) करार और सूचना प्रौद्योगिकी करार होने से पेटेन्ट सेवाओं, विश्लेषण तथा अभियोजन सहायता और इंटरनेट आधारित विवादों तथा साइबर अपराधों के नए नए आयामों में जरूरी अनुभव प्राप्त हुआ है।

10.67 लीगल प्रोसेस ऑफ श्योरिंग (एलपीओ) क्षेत्र में भारत की विशिष्टता को वैश्विक बाजार में व्यापक रूप से स्वीकृत किया जा रहा है। भारत के लिए वैश्विक एलपीआर के कारोबार के एक बड़े हिस्से पर कब्जा जमाने की संभावना बनी हुई है। भारत को उन विभिन्न मापदंडो का अच्छा खासा लाभ मिल रहा है जो एलपीओ उद्योग को भारत की ओर प्रेरित करने का कार्य करना है। भारत को मिलने वाला अपतटीय विधिक कार्य उस लागत का लगभग 80 प्रतिशत बचाता है जो संयुक्त राज्य अमरीका जैसे विकसित देश में लग सकती है। यह अनुमान है कि अमरीका में किसी नए विधि स्नातक को रोजगार देने की लागत प्रति वर्ष 150,000 अमरीकी डालर होगी जबकि भारत में यह लागत प्रतिवर्ष 15,000 अमरीकी डालर है। एक घंटे के आधार पर, भारत में 70 अमरीकी डालर की तुलना में अमरीका में 600 अमरीकी डालर बैठता है। भारत में एक कानूनी फर्म स्थापित करने का स्थापना व्यय भी अमरीका अथवा यूरोप की तुलना में कम है। अनुमानों के अनुसार, इस संबंध में भारत में लागत अमरीका की तुलनामें 40 प्रतिशत से अधिक कम है।

परामर्शी सेवा

10.68 परामर्शी सेवा तत्वत: एक ज्ञान आधारित व्यवसाय है जिसमें अनेकानेक क्षेत्रों में एक विकासात्मक भूमिका की संभावना है। परामर्शी सेवाएं न केवल अर्थव्यवस्था के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं, बल्कि ऐसे परामर्श का निर्यात अन्य देशों में भारतीय तकनीकी विशेषज्ञता की उपस्थिति बढ़ाते हैं और मेजबान देश में राष्ट्रीय विकास में उल्लेखनीय योगदान देते हुए कई तरीकों से विदेशी क्षेत्र को बढ़ावा देते हैं, जिसमें विदेशी मुद्रा राजस्व, प्रौद्योगिकी और पण्य वस्तुओं (विशेषकर पूंजीगत वस्तुएं और कच्ची सामग्री) के निर्यात का संवर्धन और कर्मियों को प्रशिक्षण देना शामिल हैं। भारत के परामर्श उद्योग प्राप्त होने वाले राजस्व का 2007 में 4.41 बिलियन अमरीकी डालर का अनुमान लगाया गया था। यद्यपि परामर्शी व्यवसाय ने 2007 में स.घ.उ. में केवल 0.44 प्रतिशत का योगदान दिया था, इस उद्योग की विकास दरें 2002 और 2007 के बीच लगभग 73.68 प्रतिशत के सीएजीआर के चलते पिछले कुछ वर्षों में बहुत उत्साहजनक रही हैं। एशिया पैसिफीक परामर्श (एपीएसी) उद्योग ने 2008 में 33.5 बिलियन अमरीकी डालर मूल्य का राजस्व उत्पन्न किया था जिसमें भारत का योगदान 1.81 बिलियन अमरीकी डालर था अर्थात कुल एपीएसी बाजार का 5.4 प्रतिशत हिस्सा।

10.69 परामर्शी सेवाओं के बाजार को मुख्यत: प्रबंधन परामर्शी सेवा और इंजीनियरी परामर्शी सेवा के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। परामर्शी सेवाओं के दोनों क्षेत्रों में आमतौर पर मुहैया कराई जाने वाली कुछ सेवाओं में शामिल हैं–परियोजना रिपोर्टें, प्रभाव अध्ययन, मूल्यांकन/आकलन अध्ययन, सलाहकारी सेवाएं, डिजाइन एवं विस्तृत इंजीनियरी। भारत में परामर्शी सेवाएं अनेक निकायों द्वारा मुहैया कराई जा रही है, जिनमें मुख्य श्रेणियां हैं–व्यष्टिगत परामर्शदाता, परामर्शी फर्में, विकास एवं अनुसंधान संगठन, शैक्षणिक संस्थानों और पेशेवर निकाय। इस बाजार में परामर्शी फर्में सबसे बड़े भागीदार है (64 प्रतिशत) जिनके बाद व्यष्टिगत परामर्शदाओं (22 प्रतिशत), विकास एवं अनुसंधान संगठनों (10 प्रतिशत), शैक्षणिक संस्थानों (3 प्रतिशत) और पेशेवर निकायों (1 प्रतिशत) का स्थान है। जिन ग्राहक क्षेत्रों को परामर्शी सेवाएं दी जाती हैं, उनमें ये शामिल हैं–कृषि,बैंकिंग और वित्तीय सेवांए, रसायन, शिक्षा, ऊर्जा, मनोरंजन, पर्यावरण, अभिशासन, लोक प्रशासन और नीति, आतिथ्य, अवसंरचना, विनिर्माण, स्थावर संपदा, खुदरा, सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, परिवहन और उपयोगिताएं।

10.70 भारतीय प्रबंधन परामर्शीबाजार अभी शैशवावस्था में है जिसकी मुख्य विशेषता तेजी से विकास और भागीदारों का अधिसंख्या में प्रवेश होना हैं। हालांकि वर्ष 2006-07 में 1.5 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर यह राजस्व की मात्रा की दृष्टि से वैश्विक प्रबंधन परामर्श बाजार के मुकाबले अभी भी अपेक्षाकृत छोटा है, भारतीय प्रबंधन परामर्शी उद्योग ने आंशिक रूप से उस निम्न आधार, जिससे यह उभरा, के कारण तेजी से विकास दर्शाया है। प्रबंधन परामर्शी सेवाओं के निर्यात में वृद्धि भी अधिक रही जब वर्ष 2006-07 में 7.3 बिलियन अमरीकी डालर का निर्यात हुआ।

10.71 भारतीय इंजीनियरी परामर्शी बाजार में उछाल आ रहा है जहां अनेक बड़े पैमाने की विकास परियोजनाएं इसके विकास को प्रेरित कर रही है। यह प्रबंधन परामर्शी बाजार के मुकाबले अधिक विकसित बाजार है। हालांकि वर्ष 2006-07 में 2.91 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर राजस्व की मात्रा की दृष्टि से वैश्विक इंजीनियरी बाजार की तुलना में यसह अभी भी अपेक्षाकृत छोटा है, फिर भी भारतीय इंजीनियरी परामर्शी उद्योग में पिछले कुछ वर्षों में सतत् विकास देखा गया है।

10.72 पिछले दशक के दौरान भारत विश्वभर में सर्वाधिक तेजी से विकसित होते एक परामर्शी बाजार के रूप में उभरा है। इसका मुख्य कारण एफडीआई प्रतिबंधों का उदारीकरण, भारतीय बाजार में अनेक नए भागीदारों का प्रवेश, सबसे प्रमुख क्षेत्रों में उच्च संवृद्धि, भारत का उभरते अर्थव्यवस्था का होना और कम कीमत की सोर्सिंग पहुंच में बड़े हुए निवेश गतिविधियां है।

निर्माण

10.73 भारत में निर्माण उद्योग विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। क्योंकि यह विभिन्न संबद्ध क्षेत्रों में निवेश अवसरों को पैदा करता है। निर्माण उद्योग ने वर्ष 2010-11 में (लगभग 8 प्रतिशत के शेयर में) राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में अनुमानित 3,84,282 करोड़ रुपए (स्थिर कीमतों में) का योगदान दिया। सभी तबकों से निर्माण क्रियाकलापों में शामिल बड़ी कम्पनियों के साथ मध्यम पैमाने की कम्पनियों जिसमें विशिष्ट गतिविधियों में विशेषज्ञता

हासिल है; और छोटे एवं मध्यम संविदाकर्त्ताओं जो उपसंविदा आधार पर कार्य करते हैं और इन क्षेत्रों में कार्य निपटाते हैं। यह क्षेत्र श्रम प्रधान है और परोक्ष कार्यों सहित 35 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है।

10.74 भौतिक सम्पत्तियों का निर्माण, निर्माण गतिविधि का एक महत्वपूर्ण अंग है। उदारी-करण के पूर्व, यह क्षेत्र अवसंरचना पर होने वाले सरकारी खर्च पर आश्रित था, क्योंकि आवास कॉप्लेक्स के लिए नीति क्षेत्र द्वारा निर्माण गतिविधि की जाती है। वर्ष 2000 में, इस क्षेत्र को उद्योग का दर्जा दिया गया। तब से, सरकारीनीति भागीदारी के आधार पर परियोजनाओं का कार्य प्रारंभ करने के लिए सरकार द्वारा कई कदम उठाए हैं। इन पहलों का बिल्ड-ऑपरेट-ट्रांसफर (बीओटी), बिल्ड-ऑपरेट-ऑन-ट्रांसफर (बीओओटी), और बिल्ड-ऑपरेट-लीज़ ट्रांसफर (बीओएलटी) परियोजनाओं के कई निजी स्वामित्व पर प्रभाव पड़ा है। नगर क्षेत्र, आवास, निर्मित अवसंरचना, विकास परियोजनाओं का निर्माण (जिसमें आवास, व्यवसायिक परिसर, शैक्षिक संस्थानों और मनोरंजन संबंधी सुविधाएं शामिल हैं) में स्वत: मार्ग के तहत 100 प्रतिशत तक की एफडीआई की अनुमति दी जाती है।

10.75 निर्माण क्षेत्र का निर्माण सामग्री संबंधी उद्योग के साथ प्रमुख जुड़ाव है चूंकि निर्माण कार्य में होने वाले खर्चों (लगभग 40 प्रतिशत से 50 प्रतिशत) के शेयर का हिसाब लिया जाता है। ऊर्जा परियोजना, पत्तन, रेलवे, सड़क और पुलों जैसे आवश्यक असवंरचना ढांचागत निर्माण करने के लिए, औसतन आधे से अधिक निवेश की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए यह क्षेत्र समग्र अर्थव्यवस्था की उत्पादकता क्षमता को बढ़ाने के लिए आवश्यक है। एक ट्रिलियन अमरीकी डालर की ढांचागत निवेश को बढ़ाने की योजना के साथ, आने वाले भविष्य में भारतीय अर्थव्यवस्था के एक वृद्धि इंगत होने के सभी विनिर्माण क्षेत्र निर्धारित है।

10.76 वर्ष 2004 से सेवा कर के तहत निर्माण सेवाओं को रखा गया है। तथापि, बांधों, सड़कों, पुलों, रेलवे और हवाई अड्डे जैसे कतिपय ढांचागत परियोजनाओं और सरकारी/स्थानीय निकायों द्वारा अवार्ड दिए गए परियोजनाओं को सेवा कर से मुक्त रखा गया है। वर्ष 2004 से पूंजी वस्तुओं पर ऋण, इनपुट और इनपुट सेवाओं के उपलब्ध कराने के लिए निर्माण सेवा प्रदाताओं को केन्द्रीय मूल्य वर्द्धित कर (सेनवेट) क्रेडिट की अनुमति दी गई है। इसके अलावा डीम्ड आयात परियोजनाओं को वस्तुओं की आपूर्ति करने पर उत्पाद शुल्क लौटाया गया है। मौजूदा वैट अधिनियम में दस्तावेजी साक्ष्यों के आधार पर सबकॉन्ट्रैक्टर के टर्नओवर की कटौती का प्रावधान निहित है।

10.77 सभी घरेलू सिविल परियोजनाओं के लिए मानक संविदा दस्तावेज प्रयोग में लाना, अन्तर्राष्ट्रीय परियोजनाओं के लिए प्रभावी तौर पर बोली लगाने के लिए संघ की स्थापना करना और ग्राहकों द्वारा किए जा रहे अधिकांश विदेशी निविदाओं में पूर्व निश्चित शर्तों के मामले जिनमें उपस्कर निविदाबंधित कम्पनी द्वारा मुहैया कराए जाने हैं को अनिवार्य रूप से विकसित देशों से आपूर्तिकर्ताओं की अनुमोदित सूची से ही लिया जाना चाहिए को सुलझाना आदि कुछेक नव उपायहैं जिन्हें विनिर्माण क्षेत्र में लागू किया जाना चाहिए। अन्य दूसरे क्षेत्र जिनपर भी ध्यान दिया जाना जरूरी है वह यह है कि दोहरी कराधान उपेक्षा संधि की तर्ज पर ही दोहरी गारन्टी उपेक्षा संधि की संभावना पर भी विचार किया जाए क्योंकि विदेशी ग्राहक यह जोर देते हैं कि बैंक गारन्टियां परियोजना निष्पादक देश में ही कार्यरत किसी स्थानीय बैंक के तहत ही जारी की जाए जिसके फलस्वरूप भारतीय संविदाकारी कंपनियों के भारतीय बैंकों के साथ स्थानीय विदेशी बैंकों की गारन्टी देने पर ही बुलाया जाता है जोकि भारतीय बैंकों से प्राप्त प्रति गारन्टी के आधार पर ही ग्राहक को अंतिम गारन्टी प्रदान करते हैं।

अन्य सामाजिक सेवाएं

10.78 स्वास्थ्य संबधी देखभाल और शिक्षा दो प्रमुख सामाजिक सेवाएं हैं (अध्याय 12 देखें)। इन दोनों के अलावा, भारत में खेलकूद जैसे कुछ अन्य सामाजिक सेवाओं को महत्व दिया जा रहा है।

खेलकूद

10.79 खेलकूद मानव व्यक्तिव के सम्पूर्ण विकास के एक अभिन्न अंग के रूप में रहा है। मनोरंजन और शारीरिक दुरुस्ती के साधन से जनमानस होने के अलावा, खेलकूद ने राष्ट्रीयता की पहचान और अन्तरराष्ट्रीय समुदाय के साथ जोड़ने की महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाई है। पर्यटकों के आगमन और रोजगार सृजित करने के लिए खेलकूद का आयोजन एक महत्वपूर्ण गतिविधि के रूप में उभर रहा है और राष्ट्रीय आय में अपना योगदान दे रहा है।

10.80 उत्तरोत्तर योजनाओं में शारीरिक क्रिया, खेल और खेलकूद ध्यान आमृष्ट करता रहा है। तथापि, वर्ष 1982 में भारत ने नवें एशियाई खेल का मेजबानी की और अब यह नीतिगत विषय बन गया है। देश में खेलों के विकास और संवर्धन के लिए संगठित और पद्धतिबद्ध फ्रेमवर्क के विकास में राष्ट्रीय खेल नीति 1982 पहला कदम था और यह राष्ट्रीय खेल नीति 2001 द्वारा फलीभूत किया गया था। इस नीति में व्यापक खेल के उद्देश्य से, अपेक्षित अवसंरचना और उपकरणों के उपलब्ध कराने प्रशिक्षण सुविधाओं, वैज्ञानिक तकनीकी, पोषणयुक्त आहार और प्रतिस्पर्धा के एक्सपोजर उपलब्ध करके सभी स्तरों पर प्रतिभा को निखारने के उद्देश्य से 1984 में भारतीय खेलकूद प्राधिकरन (साई) की स्थापना की गई।

10.81 19वां राष्ट्रमंडल खेल (सीडब्ल्यूजी) एक मेगा स्पोंटिंग एवेंट है जो प्रत्येक चार वर्ष में आयोजित किया जाता है जिसमें 71 देशों और शासित प्रदेश भाग लेते हैं भारत सफलतापूर्वक

आयोजित किए गए। यह कार्यक्रम रोजगार सृजन, अवसंरचनागत विकास, पर्यटन अन्त:प्रवाह, और राष्ट्रीय आय में वृद्धि का महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। खेलकूद मंत्रालय ने राष्ट्रमंडल खेल 2010 के लिए भारतीय खिलाड़ियों की तैयारी के लिए भारत के शीर्ष खिलाड़ियों के लिए व्यापक और अद्भूतपूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। राष्ट्रमंडल खेल 2010 हेतु व्यापक और गहन प्रशिक्षण और भारतीय खिलाड़ियों के एक्सपोजर के लिए स्वदेश और विदेश में भारतीय खिलाड़ियों की तैयारी के लिए एक स्कीम चलायी गयी। इस दौरान, 170 भारतीय और 30 विदेशी प्रशिक्षक और 78 सहायता करने वाले तकनीकि कार्मिक शामिल थे। इसमें भारत द्वारा अब तक की सबसे उम्दा प्रदर्शन रहा जो किसी भी बड़े, बहु-विविध खेलकूद कार्यक्रम में 101 मेडलों सहित (38 सोना, 27 चांदी और 36 कांस्य) वे परिणामस्वरूप प्राप्त हुई जो मेलबोर्न, 2006 के राष्ट्रमंडल खेल में जीते गए मेडलों से दुगुना है। इस उपलब्धि में ऑस्ट्रेलिया के बाद भारत का दूसरा स्थान रहा और इंगलैंड, कनाडा और दक्षिण अफ्रीका जैसे बड़े खेल देशों से आगे रहा।

चुनौतियां और संभावनाएं

संभावनाएं

10.82 सेवा क्षेत्र की संभावनाएं जो कि अमरीका में सब-प्राइम संकट और ग्लोबल वित्तीय संकट के दौरान थोड़ा धूमिल हुई थी अब एक बार फिर बेहतर हो रही है। हाल ही में, विभिन्न सेवा फर्मों के कारोबार निष्पादन के संकेत बताते हैं कि विभिन्न 35 क्षेत्र भी इस पूर्वानुमान में सहायक हो रहे हैं यहां तक कि संकट वर्ष के दौरान वार्षिक सेवा-वृद्धि 10 प्रतिशत के लगभग मापी गई थी जोकि 2005-06 से बरकरार है। यह समग्र जीडीपी, जो कि वर्ष 2007-08 में 9.3 प्रतिशत थी से घटकर वर्ष 2008-09 में 6.8 प्रतिशत पर आ पहुंची थी, से विपरीत है। इस प्रकार सेवा क्षेत्र की बहाली में, अर्थव्यवस्था को बनाए रखने में भी भारी योगदान दिया है।

चुनौतियां

10.83 इस प्रकार सेवाओं में की गई असंख्य गतिविधियों, और विकास सहायताओं एक सतर्क और विशिष्ट कार्यनीतियां अपेक्षित हैं। तेजी से विकासमान, रोजगारोन्मुखी, एफडीआई को आकर्षित करते क्षेत्र के साथ और व्यापक निर्यात की संभावना वाले कई अवसर हमारे सामने हैं तथापि चुनौतियां भी कई हैं। इस क्षेत्र में एक चुनौती सूचना प्रौद्योगिकी और आईटी दूरसंचार जैसे क्षेत्रों में, उन क्षेत्रों में जहां भारत पहले से ही अच्छी स्थिति पर पहुंच चुका है, अपना प्रति स्पर्धात्मकता को बनाए रखना है। घरेलू क्षेत्र में गहन और व्यापक उपयोग से अन्य वस्तुओं तथा सेवाओं की उत्पादकता और कौशल में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन होगा। दूसरी चुनौती सड़कों तथा पर्यटन और जहाजरानी जहां, अन्य देश स्वयं को पहले ही स्थापित कर चुके हैं किन्तु जहां भारत के प्रवेश की जबरदस्त संभावना अभी भी बनी हुई है ऐसे पारम्परागत क्षेत्रों में स्वयं को स्थापित करना है। तीसरी चुनौती वित्तीय सेवाओं, स्वास्थ्य, रक्षा, शिक्षा, लेखांकन तथा अन्य कारोबारी सेवाओं, जहां भारत का एक व्यापक घरेलू बाजार है और जहां उसने अन्तरराष्ट्रीय बाजार में अपना एक मुकाम बनाने के संकेत भी दिए हैं तथा जहां उसने अपनी पूरी क्षमताओं को निचोड़ा भी नहीं है। ऐसे वैश्विक व्यापार सेवाओं के क्षेत्र में खुद को स्थापित करना है। बेहतर आंकड़ों व सूचनाओं को एकत्र करना तथा उन सभी सूचनाओं को एक साथ बांटने में बेहतर समन्वित कार्यनीति का विकास करना भी एक चुनौती है। विनियामक सुधार भी महत्वपूर्ण है क्योंकि नई घरेलू विनियमन त था बाजार में पहुंचने में आने वाली बाधाएं इस तीव्र विकास वाले क्षेत्र में हमें रोक सकती है। चूंकि सेवाओं में विविध क्षेत्र हैं इसलिए इन मामलों तथा नीतियों को अलग-थलग करके नहीं लिया जा सकता। इन चुनौतियों तथा मसलों के निराकरण हमारे सेवा क्षेत्र, को और सशक्त कर सकता है, जो कि दो अंकीय अनेक समावेशी और संतुलित वृद्धि प्राप्त करने की सहायता हेतु नई और बेहतर रोजगार उपलब्ध कराते हुए, इन चुनौतियों तथा मसलों के निराकरण करने जो कि दो अंकीय विकास संभावना वाले हमारे देश की मुख्य प्रेरक शक्ति को समग्र और राज्य स्तर दोनों सशक्त कर सकता है।